SSLC

HINDI

FOCUS AREA NOTES

पाठ	**विधा / प्रोक्ति**	**रचयिता**
1. बीरबहूटी	कहानी	प्रभात
3. टूटा पहिया	कविता	धर्मवीर भारती
4. आई एम कलाम के बहाने	फिल्मी लेख	मिहिर पांडेय
5. सबसे बडा शो मैन	जीवनी	गीत चतुर्वेदी
6. अकाल और उसके बाद	कविता	नागार्जुन
7. ठाकुर का कुआँ	कहानी	प्रेमचंद

SREEJITH R, KOVOOR, VARKALA SCRIPS

1. बीरबहूटी

PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना) (बादल बहुत बरस लिए थे। ---- स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे।)

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?

साहिल और बेला

2. ' बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था। वे बादलों के ऊपर छाए हुए थे।' - इसका मतलब क्या है ?

आगे भी वर्षा होगी

3. ' बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था।'- किनमें ?

बादलों में

4. अभी-अभी हुई बारिश का वर्णन कहानीकार ने कैसे किया है ?

मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं। पेडों की तने अभी भी गीले थे। मूँगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे। खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था। बाजरे की लंबी पतले पातों में पानी बूँदें अटकी हुई थीं।

5. ' साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे।'- क्यों ?

उन्हें बीरबहूटियों से मिलना था।

6. बेला किसके साथ बीरबहूटियाँ को देखने गई ?

साहिल के

7. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं ?

बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं।

8. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे ?

बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में

9. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे ?

एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर, गीली ज़मीन पर बैठकर

10. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत।

समय – सुबह 9 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा। इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।

बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ...।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है। तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है।

बेला - ठीक है साहिल। तो जल्दी चलें।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं।)

11. टिप्पणी – सच्ची दोस्ती

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है। दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है। एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है। दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती। असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं। सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है। सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता। वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं। सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती। सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है। समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है।

SREEJITH R, KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना) (पैन में कुछ स्याही बची थी ...... पानी पीने चला जाऊँ? ")

1. बेला और साहिल दुकान क्यों पहुँचे ?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. ' पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे । पर उन्हें निराशा लौटना पडा ।'- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
3. ' पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया ।'- ऐसा करना उचित है ? अपना मत प्रकट करें ।
   ऐसा करना उचित नहीं है । अगर दुकान जाने के बाद वहाँ स्याही है, यह निश्चित कर ऐसा करें तो परवाह नहीं होता ।
4. ' स्याही कल ही मिल पाएगी ।'- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी ।
5. किसने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ?
   साहिल ने
6. बेला और साहिल कितने दर्जे में पढते थे ?
   पाँचवीं
7. " बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए "- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?

इसका मतलब है कि बरसात की संभावना देखकर पानी भरे घडे को मत ढुलाना । यहाँ साहिल ने दुकान से स्याही भरवाने के विश्वास में पैन में बची हुई स्याही ज़मीन पर छिडक दी और बाद में भरवा भी न सका । यानी आनेवाली भलाई देखकर अपने पास बची हुई किसी को तुच्छ समझकर छोड देना उचित नहीं होगा ।

8. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।
समय - सुबह 10 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है ।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।
दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?
बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।
दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।
साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?
दुकानदार - पैन में थोडी भी स्याही नहीं है ।
बेला - नहीं भैया । पैन में थोडी स्याही थी । इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।
दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।
साहिल - हाँ गलती हुई ।
दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो ?
साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।
दुकानदार - दोनों ?
बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।
दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी ।
बेला - ठीक है भैया ।
(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

9. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार) (गणित के माटसाब ---------- नज़र नहीं मिला पाई ।)

1. नज़र मिलाना - मुँह की ओर देखना/ चेहरे पर देखना 2. शर्मिंदा महसूस करना - लज्जित होना/ अपमानित होना

1. बच्चे गणित के माटसाब सुरेंदर जी से क्यों डरते थे ?
   कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर माटसाब बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।
2. ' खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे ।'- क्यों ?
   खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था । और वे माटसाब से बहुत डरते थे ।
3. ' गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर-उधर फेंक देते थे ।'- उसपर अपना विचार लिखें ।
   छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।
4. माटसाब ने बेला के बालों में पंजा क्यों फँसाया था ?
   उसकी कॉपी में गलती पाकर
5. माटसाब ने बेला को क्यों छोड दिया ?
   कॉपी में गलती न होने से
6. साहिल क्यों बुरी तरह डर गया ?
   बेला के भयभीत चेहरे को देखकर
7. ' बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।'- क्यों ?
   क्योंकि साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया ।
8. ' बेला साहिल से नज़र नहीं मिला पाई ।'- क्यों ?
   क्योंकि उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने अकारण बालों में पंजा फँसाकर उसको अपमानित किया ।
9. ' बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।'- इसके क्या–क्या कारण हैं ?
   बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।
10. ' माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।'- बेला ऐसा क्यों सोचती है ?
   बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है । साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी । इसलिए वह ऐसा सोचती है ।
11. ' बेला का मन बहुत खराब हो गया ।'- क्यों ?
   साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।
12. ' जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।'- क्यों ?
   बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

13. चरित्रगत विशेषताएँ - गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे । स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे । इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे । वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे । ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना, बालों में पंजा फँसाना, कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं । भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे । छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी । बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी । बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे ।

14. रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान : …………… फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता दिखाई । कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा । लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया । उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी । छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं है । कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं । कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी । बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है ।

SREENA P. KOVOOR, VARKALA SCRIUS

15. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : …………………..

आज मुझे बहुत दुख का दिन था। गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया। लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया। मैं बहुत डर गयी थी। मेरे हाथ पैर काँप रहे थे। मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया। माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा। मुझे बहुत शरम आया। इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई। क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती। घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था। आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी।

16. सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का ज़िक्र करते हुए

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेजती हूँ।

आज स्कूल में एक घटना हुई। तीसरी पिरीयड गणित का था। गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे। आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे। तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया। लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी। उन्होंने मुझे छोड दिया। मैं डर से काँप रही थी। उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी। फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया। तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं। उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है। वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

17. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी। वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है। उसका दोस्त है साहिल। दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढते थे। साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं। बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है। एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है। पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं। बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं।

18. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या ?
बेला - फिर मैं क्या करूँ ?
साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं।
बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी। फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया।
साहिल - हाँ, वे भी जानते थे। इसलिए तुम्हें छोड दिया।
बेला - मैं सचमुच डर गई थी।
साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था।
बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे। मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी।
साहिल - मुझे भी एसा लगा।
बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ … सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे … पर।
साहिल - तुम इस घटना को भूलो।
बेला - पर … मैं दुख सह न पाती। घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी।
साहिल - ज़रूर बताना। अब खुशी से घर जाओ।
बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी।

19. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो ?
बेला - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई।
माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?
बेला - नहीं। गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया।
माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी।
बेला - नहीं माँ। मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था।
माँ - छोड दो। मास्टर जी है न ?
बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी।
माँ - कोई बात नहीं। वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।

SREEJITH R, KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

PART 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

(दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो --------------- और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।)

1. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी थी ?

छत से गिर जाने के कारण

2. बेला को बच्चे क्यों चिढा रहे थे ?

बेला के सिर पर चोट लगने के कारण सफेद पट्टी बाँधी थी । इसलिए बेला को बच्चे चिढा रहे थे ।

3. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों गए थे ?

लंगडी टाँग खेलने केलिए

4. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

5. बेला कहाँ जाने केलिए ज़िद की ? क्यों ?

गाँधी चौक में जाने की, क्योंकि वह खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलना चाहती थी ।

7. ' नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो '- यहाँ साहिल का कौन–सा मनोभाव स्पष्ट होता है ?

बेला से उसकी अंतरंग मित्रता का ।

8. साहिल ने बेला को खेलने जाने से क्यों मना करना चाहा ?

बेला के सिर पर चोट लगी थी । खेलने पर फिर चोट लगने की संभावना थी । इसलिए साहिल ने ऐसा चाहा ।

9. ' गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'- इसका कारण क्या होगा?

अपने चारों ओर हँसते-खेलते बच्चों को देखकर

10. ' इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'- इसका मतलब क्या है ?

गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

11. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।

2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है ।

दृश्य का विवरण - दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?

बेला - (हँसकर) छत से गिरकर चोट लग गयी ।

साहिल - यह कब हुआ ?

बेला - बहुत दिन हो गए ।

साहिल - अब दर्द है क्या ?

बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।

साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?

बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।

साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।

(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

12. साहिल की डायरी (गाँधी चौक का खेल)

तारीख : ....

आज का दिन मेरेलिए कैसा रहा, बता नहीं सकता । दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

PART 5 (रविवार, साहिल पिंडली में चोट लगने से अस्पताल में) (रविवार का दिन था । ------ ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते ।)

1. साहिल की पिंडली में चोट लगी । कैसे ?

रविवार के दिन साहिल अपने घर में स्कूल पर चढकर नीम के पेड की डाली पकडकर झूम रहा था । तब टूटे स्टूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गई । इस प्रकार उसकी पिंडली में चोट लगी ।

2. साहिल को सरकारी अस्पताल में पट्टी बँधवाने केलिए क्यों ले जाया गया ?

उसकी पिंडली में कील लगने से एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था ।

3. बेला क्यों अस्पताल आई है ?

सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

4. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?
बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?
साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।
बेला - कैसे ?
साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।
बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?
साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।
बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?
साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।
बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है । बाई ।
साहिल – ठीक है बेला, बाई ।

5. बेला की डायरी (अस्पताल में जाना, वहाँ साहिल को देखना)

तारीख : ....

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी । तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा । वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था । स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई । एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था । उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था । ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था । बहुत मुश्किल से खडा था । बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी । पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें । अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में ।

PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई) (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया । ---- " नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।")

1. अजमेर के स्कूल में साहिल कौन-सी कक्षा में पढेगा ?

छठी

2. बेला के पापा उसे किस पाठशाला में पढाना चाहता है ?

राजकीय कन्या पाठशाला में

3. ' बेला और साहिल अब फुलेरा के स्कूल में नहीं पढ सकते ।'- क्यों ?

उनका स्कूल पाँचवीं तक था । वे दोनों अब छठी में आ गए ।

4. बेला और साहिल क्यों अलग हो रहे हैं ?

क्योंकि फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।

5. साहिल और बेला के बिछुडन का कारण क्या है ?

फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।

6. बेला और साहिल का दोस्ती क्यों छूट जाती ?

क्योंकि दोनों आगे की पढाई केलिए अलग-अलग स्कूल जाते हैं ।

7. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडता है ?

साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है । इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है ।

8. ' पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आने पर दोनों बच्चे बहुत दुखी थे ।'- कारण क्या था ?

गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा ।

9. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान - फुलेरा कस्बे की एक गली ।
समय - सुबह 11 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है ।
दृश्य का विवरण - दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं ।

SREEJITH P. KOVOOR, VARKALA SCRIPS

संवाद -
साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?
बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं ।
साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?
बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में । और तुम ?
साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।
बेला - क्यों साहिल ?
साहिल - पता नहीं क्यों ?
बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?
साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?
साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

10. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप
माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो ।
साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?
माँ - नहीं बेटा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।
साहिल - मैं अजमेर में । ऐसा है न माँ ?
माँ - हाँ बेटा । तुम्हारे पिता ने कहा था ।
साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?
माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा ।
साहिल - मुझे नहीं लगता । क्या बेला मुझे भूलेगा ?
माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा ।
साहिल - ठीक है माँ ।

11. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)
तारीख : ....
आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ–साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

12. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)
तारीख : ....
आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था । कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये । अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ । आज संतोष के साथ दुख भी है । बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया । आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा । मेरी भी आँखें भर गई थीं । बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा । वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी । फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था । वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

13. फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है । इस विषय के आधार पर समाचार तैयार करें ।
फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा की सुविधाएँ नहीं
स्थान : .... फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है । यहाँ सिर्फ एक प्राईमरी स्कूल है । वहाँ पाँचवीं तक है । उच्च शिक्षा केलिए यहाँ के लोगों को दूसरे स्थानों पर जाना पडता है । यहाँ से दूसरे स्थान जाने केलिए गाडियों की सुविधाएँ भी नहीं हैं । फुलेरा के अधिक लोग किसान हैं । उनको अपने बच्चों को दूरी पर भेजने की संपत्ति भी नहीं है । यह बात शासकों को समझाई तो भी उनकी ओर से कोई कार्यवाई नहीं किया है । अब फुलेरा के लोग मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को निवेदन करने जा रहे हैं । लोगों का विश्वास है कि इस निवेदन से शासक लोग आवश्यक कार्यवाई लेंगे । ज़रूर यहाँ उच्च शिक्षा की आवश्यक सुविधाएँ देनी चाहिए ।

SREEJITH P. KOVOOR, VARKALA SCRIPS

PART 7 (रिपोर्ट कार्ड देखना) (साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था ---------------- एक इंच लंबा चोट का निशान था।)

1. ‘ बारिश से पहले की बारिश ’- इसका क्या मतलब है ?

   बेला और साहिल के दुख भरे आँसू बरसात के समान बरस रहे हैं।

2. ‘ उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था।‘- यहाँ ‘ उनमें ’ किसकेलिए प्रयुक्त है ?

   साहिल की आँखों में

3. ‘ परीक्षा पास होने पर भी बेला और साहिल की आँखों से आँसू आये।‘- क्यों ?

   साहिल और बेला पहली बार अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं। यह सोचते समय दोनों की आँखों से आँसू आए।

4. ‘ साहिल की आँखें लाल हो गईं।‘- क्यों ?

   बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं। वे यह सहन नहीं सकते थे। दोनों रोने लगे। इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं।

5. ‘ आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे।‘- इससे आपने क्या समझा ?

   पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं। इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे, मिल न पाएँगे। इसलिए ऐसा कहा होगा।

6. बेला कहने लगी,“ मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल।“- इस प्रसंग में निहित बेला का भाव कौन-सा है ?

   प्यार

7. ‘ यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था।‘ कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?

   हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं। इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं। यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी।

8. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता।

समय - सुबह के 10 बजे।

पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है।

घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है। वे आपस में बातें करने लगे।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना।

बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?

साहिल - मुझे भी नहीं पता।

बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?

साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे।

बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे।

साहिल - ठीक है बेला।

(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं।)

9. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ।

परसों मैं इधर पहुँचा। यात्रा बहुत मुश्किल थी। गाडी में बडी भीड थी। कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई। स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है। बडा स्कूल है। बडे बडे कमरे और मैदान। आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है। कल सुबह स्कूल खुलेगा। होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं। कमरे में मेरा सहवासी है गणेश। वह आगरा से है। स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है। यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं। कल शाम हम घूमने गए। इलाका बहुत सुंदर है। फुलेरा कितना छोटा है। यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं। यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं।

आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा। वहाँ की सारी बातें विशद रूप से लिखना। अगली छुट्टी में हम मिलें। तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

10. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय साहिल,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, तुम्हारे नए स्कूल के बारे में जानने और मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नया दोस्त मिला है क्या ? हॉस्टल स्कूल के पास ही है न ? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ?

वहाँ की सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

11. पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस, कोल्लम
मशहूर कथाकार प्रभात की
पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की
सच्ची मित्रता की कहानी
बीरबहूटी
एकांकी के रूप में
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - नवीन, दसवीं कक्षा
निदेशन - श्री. वरुण, हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति - छात्र-छात्राएँ, दसवीं कक्षा
आइए… देखिए… मज़ा लूटिए…
सबका स्वागत

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA SCRIPS

3. टूटा पहिया PART -1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. समानार्थी शब्द लिखें ।

1. चक्र - पहिया 2. ललकार - चुनौती 3. समझने में कठिन / रहस्यमय - दुरूह 4. सैन्य - सेना
5. बडे धैर्यशाली - दुस्साहसी

2. मतलब क्या है ?

1.मत फेंकना – नहीं छोडना / उपेक्षा नहीं करना 2. चुनौती देना – ललकार देना 3. घिर जाना – फँस जाना

3. किसका प्रतीक है ?

1. टूटा पहिया – लघु मानव का / मानवीय मूल्य का / हाशिए पर छोडे गए लोगों का
2. चक्रव्यूह – मानव जीवन की समस्याओं का / दुरूह वर्तमान संसार का
3. अभिमन्यु – अधर्म के विरोधी का/ साहसी आदमी का / साधारण जनता का / चुनौती का सामना करनेवाले का

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?
   संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा नहीं करना चाहिए ।
2. कविता में **मैं** का प्रयोग किस केलिए किया गया है ?
   टूटा पहिया
3. हमें किसकी उपेक्षा मत करनी चाहिए ?
   टूटे पहिये की (मानवीय मूल्य की / लघु मानव की)
4. ‘ लेकिन मुझे फेंको मत ’ यह किसकी प्रार्थना है ?
   टूटे पहिये की
5. टूटे पहिए के इस प्रकार कहने का कारण क्या है ?
   टूटा पहिया एक बार अभिमन्यु का काम आया था ।
6. चक्रव्यूह के अंदर घुसकर युद्ध करनेवाला वीर कौन था ?
   अभिमन्यु
7. चक्रव्यूह की रचना किसने की थी ?
   द्रोणाचार्य ने
8. कवि के मत में अक्षौहिणी सेनाओं को किसने चुनौती दी ?
   अभिमन्यु ने
9. टूटा पहिया किसका सहारा बन सकता है ?
   किसी दुस्साहसी अभिमन्यु का
10. कविता के अनुसार अभिमन्यु ने कौन-सा दुस्साहस दिखाया था ?
    केवल चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करने की विद्या जानते हुए उसके अंदर घुसने की
11. दुरूह चक्रव्यूह क्यों कहा गया है ?
    क्योंकि चक्रव्यूह के अंदर घुसना और बाहर निकलना कठिन था ।
12. कवि ने कोई दुस्साहसी अभिमन्यु क्यों कहा है ?
    अभिमन्यु जैसे अधर्म से लडनेवाले बहुत अधिक लोग हमारे समाज में हैं । कवि ने यह उनके बारे में कहा है ।
13. दुरूह चक्रव्यूह का महाभारत के संदर्भ में और आज के संदर्भ में क्या तात्पर्य है ?
    महाभारत काल में पांडवों को क्षति पहुँचाने केलिए कौरवों ने कठिन चक्रव्यूह का निर्माण किया था और उस चक्रव्यूह में जब अभिमन्यु निहत्थे व अकेले थे, तब भी कौरव पक्ष के अधर्मी, अन्यायी महारथियों ने उसे मार डाला । ठीक उसी प्रकार वर्तमान समय में हमारा समाज भी कौरवों के जैसे अन्यायी, अधर्मी और दुराचारी लोगों से भरा हुआ है, जो अपनी अधार्मिक शक्तियों के माध्यम से अधर्म का विरोध करनेवाले को समाप्त करने में लगे हुए हैं ।
14. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?
    कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है । महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था । उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा ।
15. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?
    क्योंकि केवल सोलह साल का लडका अभिमन्यु कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथियों से लोहा लोनो को तैयार हो जाता है ।

अथवा

अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था । लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था । फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ । इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है ।

16. कवितांश का आशय (मै रथ का टूटा हुआ पहिया .... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं रथ यानी जीवन का टूटा हुआ मानव मूल्य या उपेक्षित लघु मानव हूँ । लेकिन मुझे अनुपयोगी समझकर मत फेंकना चाहिए । क्योंकि यह तो जीवन के संघर्ष या समस्या रूपी दुरूह चक्रव्यूह है । यहाँ अक्षौहिणी सेनाओं यानी समाज के शोषण एवं पीडन की व्यवस्था और शोषकों को चुनौती देता हुआ कोई दुस्साहसी अभिमन्यु यानी अधर्म के विरोधी व्यक्ति आकर घिर जाने की संभावना है । उस व्यक्ति की सहायता करने केलिए मेरी आवश्यकता पडेगी ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

17. टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें ।

टूटा पहिया हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की प्रतीकात्मक कविता है । इस कविता के द्वारा कवि लघु मानव की प्रधानता पर बल देते हैं ।

कवि महाभारत के एक पौराणिक प्रसंग का सहारा लेते हैं । चक्रव्यूह को भेदकर उसमें प्रवेश किया अभिमन्यु उसमें फँस जाता है । कौरव पक्ष के सभी महायोद्धा एकसाथ मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करते हैं । उसके घोडे, रथ, हथियार – सब नष्ट कर देते हैं । तब उसे रथ का एक टूटा पहिया ही एकमात्र सहारा बन जाता है । इस टूटे पहिए की सहायता से वह उन महारथियों से थोडी देर केलिए अपनी रक्षा करता है और अंत में वीरमृत्यु होती है ।

यहाँ एक सारहीन या तुच्छ टूटा पहिया ही वीर योद्धा अभिमन्यु के लिए सहायक बनता है । इसी प्रकार समाज के तुच्छ माने जानेवाले मानव भी क्रांति (विप्लव) के वाहक बन सकते हैं और सामाजिक परिवर्तन संभव करा सकते हैं । अत : हमें यह मानना चाहिए कि समाज के तुच्छ माने जानेवाली बातें भी कभी-न-कभी बडी सहायक हो सकती हैं ।

वर्तमान समाज में भी तुच्छ माने जानेवाले मानव का महत्वपूर्ण स्थान है । सच्चे प्रजातंत्र में कोई भी व्यक्ति तुच्छ नहीं होता । शासन का निर्माण भी उसके हाथों से हो सकता है । याने यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है ।

18. युद्ध विरुद्ध पोस्टर तैयार करें ।

युद्ध छोडो ... सब मिलजुलकर रहो ...

1. युद्ध विनाशकारी है ।
   युद्ध छोडो शांति से रहो ।
2. युद्ध से किसीको कोई लाभ नहीं
   युद्ध सर्वनाश है उसको रोको ।
3. युद्ध देश को विकास की ओर नहीं,
   विनाश की ओर ले जाता है ।
4. युद्ध से दूर रहें ...
   मानवराशी को बचाएँ ।
5. बंदूक, तोप, अणुबम आदि का प्रयोग न होने दे ...
   मानव की धन-संपत्ति, घर, बंधुजन आदि का नाश न करने दे ।
6. युद्ध की भयानकता समझो
   आगे युद्ध न होने केलिए सब कोशिश करें ।

हिरोशिमा दिवस – अगस्त 6

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. झूठ - असत्य 2. महान योद्धा - महारथी 6. ध्वनि - आवाज़ 7. निरायुध/ शस्त्रहीन - निहत्थी

2. मतलब क्या है ?

1. कुचल देना – रौंद डालना / शत्रु का सर्वनाश कर देना 2. लोहा लेना – सामना करना / मुकाबला करना / युद्ध करना

3. किसका प्रतीक है ?

1. ब्रह्मास्त्र - सर्वनाश का / शोषक के हाथ की महाशक्ति का / भयानक हथियार का
2. महारथी - ऊँचे अन्याय वर्ग का / ताकतवालों का / शासक वर्ग का

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता के आधार पर किसका पक्ष असत्य का है ?
बडे बडे महारथी का (कौरवों का)

2. ‘ अकेली निहत्थी आवाज़ ’- यह किसके बारे में कहा गया है ?
अभिमन्यु के (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले के)

3. ‘ अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी ’- यह किसके बारे में यह कहा गया है ?
महारथी के

4. कौन ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है ?
टूटा पहिया

5. ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेने में किसने अभिमन्यु की मदद की ?
टूटा पहिया ने

6. बडे-बडे महारथी क्या-क्या करना चाहते थे ?
वे अकेली निहत्थी आवाज़ को (निरायुध अभिमन्यु को) अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते थे।

7. ‘ उसके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ’- किसके हाथों में ?
अभिमन्यु के (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले के)

8. ‘ टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है ’- कब ?
जब बडे-बडे महारथी अकेली निहत्थी आवाज़ को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें जब टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है।

9. टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है। इससे आपने क्या समझा ?
शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं। अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है।

10. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बडे-बडे महारथी
अकेली निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है।

11. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है। उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा।

12. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री. धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि कहते हैं कि महाभारत युद्ध में अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे-बडे महारथी मिलकर निरायुध अभि मन्यु पर आक्रमण करते हैं। अभिमन्यु के आक्रमण को वे अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचलने का प्रयास भी करते हैं। तब टूटा पहिया अभिमन्यु केलिए सहायक सिद्ध होता है। वह अभिमन्यु के हाथ का हथियार बनकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेता है। यह पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में बिलकुल प्रासंगिक है। जब सारा संसार न्याय केलिए लडते किसी व्यक्ति की आवाज़ को दबाने का प्रयास करेगा, तब टूटा पहिया उसके हाथ में रहकर शत्रु पक्ष के ब्रह्मास्त्रों का सामना कर सकता है। यानी निस्सार मानकर छोड देनेवाली व्यक्ति या चीज़ ही कभी हमारेलिए बहुत उपयोगी बन जाएगी। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का, अभिमन्यु अधर्म के विरोधी का, महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

PART - 3 (मैं रथ का ----- आश्रय ले)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. अचानक - सहसा 2. सत्य - सच्चाई 3. प्रवाह - गति 4. सहारा - आश्रय 5. एकत्रित - सामूहिक

2. मतलब क्या है ?

1. झूठी पड जाना – असत्य सिद्ध होना / गलत साबित होना 2. आश्रय लेना – सहारा लेना

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. रथ का टूटा पहिया स्वयं को न फेंक जाने की सलाह क्यों देता है ?

किसी दुस्साहसी अभिमन्यु के हाथों में आकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है। इतिहासों की सामूहिक गति झूठी पड जाने पर सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय ले सकता है।

2. इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर सच्चाई किसका आश्रय लेता है ?

टूटे हुए पहियों का

3. सच्चाई को टूटे हुए पहियों का आश्रय क्यों लेना पडता है ?

क्योंकि इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड गई है

4. ' सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय लेगी '- कब ?

इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर

5. ' टूटे हुए पहियों का आश्रय लेना ' माने क्या है ?

अनुपयोगी मानकर त्यागनेवाले वस्तु का कभी सहारा लेना

6. कवि के अनुसार सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय लेने कब विवश हो सकती है ?

जब समाज के इतिहास की गति सत्य और धर्म का रास्ता छोडकर असत्य, अधर्म और अन्याय के रास्ते की ओर बढे। तब सच्चाई को टूटे पहिए यानी जीवन के मानवीय मूल्यों व लघु मानव का आश्रय लेना ही पडता है।

7. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! - इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा।

8. टूटा पहिया किसका प्रतिनिधित्व करता है ? स्पष्ट करें।

टूटा पहिया **लघु मानव** का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे समाज में कुछ गरीब, निम्न जाति के लोग, दलित, आदिवासी, आदि लोगों को सब निस्सार या तुच्छ मानते हैं। वास्तव में ऐसा मानना ठीक नहीं है। क्योंकि कौन, कब, कैसे, कहाँ से काम में आएगा बता नहीं सकता। इसलिए किसीको निस्सार या तुच्छ न मानें।

अथवा

टूटा पहिया **मानवीय मूल्य** का प्रतिनिधित्व करता है। हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं चाहिए। क्योंकि पता नहीं कब समय बदले, परिस्थितियाँ विपरीत हो जाए और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो। तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है। जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य इन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहेगा। मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी।

9. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्य का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

SREEDHAR KOVOOR VARKALA SCRIPTS

4. आई एम कलाम के बहाने   PART -1 (मिहिर का संस्मरण)

मतलब क्या है ?

1. बाँछें खिल जाना – प्रसन्न होना/ खुशी से खिल जाना   2. अदला–बदली करना - लेन–देन करना/ विनिमय करना

1. बचपन में लेखक का साथी कौन था ?

मोरपाल

2. माटसाब पूछने पर मोरपाल लुक का मतलब और सही हिज्जा अच्छी तरह से बता देता है । - यहाँ मोरपाल की कौन-सी विशेषता प्रकट है ?

क्लास में उसकी सतर्कता तथा पढाई के प्रति उसकी रुचि

3. ' क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं ।'- क्यों ?

नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से

4. मिहिर और मोरपाल खाने केलिए क्या लाते थे ?

मिहिर राजमा-चावल लाता था और मोरपाल छाछ लाता था ।

5. मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?

खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का

6. ' मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा ।'- क्यों ?

अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था

7. 'मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था ।'- कारण क्या होगा ?

मोरपाल की गरीबी

8. छाछ किसकी कमज़ोरी है ?

मिहिर की

9. ' हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।'- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?

सच्ची दोस्ती का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच -नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था ।

10. मिहिर के खाने के डिब्बे में राजमा-चावल देखते ही मोरपाल की बाँछें खिल जाती थीं । क्यों ?

राजमा-चावल अमीरों का खाना है, मोरपाल तो गरीब परिवार का लडका है ।

अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था । इसलिए राजमा मोरपाल केलिए खास चीज़ थीं ।

11. मिहिर और मोरपाल खाने केलिए क्या लाते थे ?

मिहिर राजमा-चावल लाता था और मोरपाल छाछ

12. मोरपाल कैसे छाछ लाता था ?

गाँव से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर बिना ज़रा भी छलकाए लाता था ।

13. लघु लेख – मित्रता / दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है । जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है । यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है । सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है । यह तो अनमोल धन के समान होता है । इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते । सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है । अमीर- गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है ।

14. वार्तालाप (खाने की अदला बदली के बारे में)

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।
लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।
लेखक - तुम्हारे छाछ भी बहुत बढिया है ।
मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।
लेखक - ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ मैं ।
मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।
लेखक - ठीक है ।

SREESH R. KOVOOR, VARKALA SORIUS

15. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

16. मिहिर की डायरी (मोरपाल केलिए राजमा सामान्य-सी चीज़ था)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । आज मैं मित्र मोरपाल के साथ खाने केलिए बैठा । मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखकर वह बहुत खुश हुआ था । वह पहली बार राजमा देख रहा था । उसकी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । मेरेलिए तो यह सामान्य-सी चीज़ था । पर उसकेलिए वह खास चीज़ थी । उसने खाने केलिए छाछ लाया था । छाछ मेरी कमज़ोरी थी । हमने आज से खाना अदला-बदली करके खाने का निश्चय किया । मैं उसकेलिए राजमा लाऊँगा, वह मेरेलिए छाछ । हम दोनों बडी चाव से खाना खाते रहे ।

17. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल गाँव से साइकिल चलाकर स्कूल आने पर)

मिहिर - अरे मोरपाल, तुम आ गए ?

मोरपाल - हाँ । आज मैं बहुत थक गया ।

मिहिर - वह कैसे ?

मोरपाल - इस गर्मी में पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर आया है न ?

मिहिर - ओ ... मैं भूल गया ।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - वह मेरे बैक में है । और मेरा छाछ ?

मोरपाल - वह तो साइकिल के पीछे रखा है ।

मिहिर - यार तुम यह डिब्बा इतने दूर बिना छलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अभ्यास हो गया ।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा । जल्दी चलो, स्कूल की घंटी लग गई है ।

मोरपाल - ठीक है । साइकिल रखकर मैं अभी आया ।

18. टिप्पणी – गरीबी

गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है । गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान केलिए अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है । इसके कारण लोग जीवन के आधारभूत ज़रूरतों जैसे रोज़ी रोटी, स्वच्छ जल, साफ कपडे, घर, उचित शिक्षा, दवाइयाँ आदि को भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं । देश में ज़्यादातर लोग ठीक ढंग से दो वक्त की रोटी नहीं हासिल कर सकते हैं, वो सडक के किनारे सोते हैं और गंदे कपडे पहनते हैं । गरीबी का मुख्य कारण बढती जनसंख्या, कमज़ोर कृषि, भ्रष्टाचार, पुरानी प्रथाएँ, बेरोज़गारी, अशिक्षा, संक्रामक रोग आदि हैं । गरीबी की वजह से ही कोई छोटा बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद केलिए स्कूल जाने के बजाय कम मजदूरी पर काम करने केलिए मजबूर हो जाते हैं । गरीबी समाज व देश की विकास केलिए खतरा उत्पन्न करती है । इसलिए गरीबी को जड से उखाडने केलिए हरेक व्यक्ति का एक-जुट होना बहुत आवश्यक है ।

मतलब क्या है ?

1. कमरतोड मेहनत करना – अत्यधिक परिश्रम करना
2. हैरान रह जाना – आश्चर्य हो जाना
3. जान पाना – समझ सकना
4. चिढाना – क्रुद्ध बनाना

1. मिहिर को किस अवसर पर अपना बचपन बहुत याद आया ?

   आई एम कलाम फिल्म देखने पर

2. ' कई वर्षों के बाद मिहिर ने एक वास्तविकता समझ ली ।'- वह क्या थी ?

   स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझता था ।

3. मिहिर कब खुशी से नाचता था ?

   स्कूल की छुट्टी हो जाने से

4. ' मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा ।'- क्यों ?

   क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था ।

5. मोरपाल बिना नागा क्यों स्कूल चला आता था ?

   मोरपाल गरीब था । ऐसे बच्चों को छुट्टी के दिन अपने परिवार में कमरतोड मेहनत और खेत मजूरी करने पडते थे । स्कूल आते समय ही उन्हें थोडा सा आराम मिलता था ।

SREEJITH. R. KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

6. किन-किन को स्कूल से गहरा प्यार था ?
मोरपाल और उनके जैसे लेखक के कई सहपाठी

7. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?
स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था । स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं ।

8. ' मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था ।'- क्यों ?
स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

9. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या–क्या हैं ?
मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा-चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

10. मिहिर क्या देखकर हैरान रह गया ?
शादी में भी मोरपाल को स्कूली यूनीफॉर्म पहने देखकर

11. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ?
क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी ।

12. ' मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता ।'- इससे आपने क्या समझा ?
लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

13. ' मोरपाल की पढाई आठवीं के बाद छूट जाता है ।'- इसका कारण क्या है ?
गरीबी के कारण खेती में पिता की सहायता करने केलिए

14. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था । वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था । रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था ।

15. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं, पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

16. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी, इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

17. मिहिर का पत्र मामाजी को (स्कूल के अनुभवों के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्यारे मामाजी,

सादर प्रणाम । आप कैसे हैं ? घर में सब ठीक हैं न ? मैं यहाँ ठीक हूँ , मेरी पढाई अच्छी तरह से चल रही है ।

मैं इस पत्र के द्वारा अपने स्कूल के अनुभवों का वर्णन करना चाहता हूँ । मेरे स्कूल में मेरा सबसे अच्छा मित्र है मोरपाल । हम दोनों कक्षा में एकसाथ बैठते हैं, एकसाथ खाना खाते हैं । वह एक गरीब लडका है । उसका घर स्कूल से 15 किलोमीटर दूर है । मोरपाल साइकिल चलाता हुआ स्कूल आता है । उसके घर से लाया गया छाछ मुझे बहुत पसंद है । खेल घंटी में हम खाने अदला-बदली करते हैं । उसे तो मेरा राजमा चावल बहुत पसंद है । मेरे सभी दोस्त अच्छे हैं । लेकिन मुझे स्कूल जाना और यूनीफॉर्म पहनना उतना अच्छा नहीं है । फिर भी मैं रोज़ स्कूल जाता हूँ ।

शेष बातें अगले पत्र में । मामीजी और भाई-बहनों को मेरा हैलो बोलिएगा ।

आपका भानजा
(हस्ताक्षर)
नाम ।

सेवा में,
नाम
पता ।

SREEJITH KOVOOR VARKALA SCRIPTS

18. वार्तालाप को आगे बढाएँ (मिहिर को स्कूल की छुट्टी पसंद है)

मोरपाल - यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

मोरपाल - तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?

मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।

मोरपाल - पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल - स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल - हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।

मोरपाल - ठीक है । जल्दी चलो ।

19. मिहिर का पत्र (शादी में भी मोरपाल यूनीफॉर्म पहनकर आया देखकर)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैंने अपने मित्र मोरपाल के बारे में पहले तुमसे बताया था न ? उसे मैंने हमेशा स्कूल यूनिफॉर्म पहने ही देखा था । लेकिन मोहल्ले की किसी शादी में उसे वही स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए देखा तो सचमुच मैं हैरान रह गया । कोई शादी में ऐसा आता है क्या ? हम तो शादी में बेहतर कपडे ही पहनते हैं न ? सोचा कि उससे इसके बारे में पूछ ले । बाद में ही मुझे पता चला कि उसके पास एकमात्र कमीज पैंट का नया जोडा वह नीली -खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी । इसलिए वह हमेशा यही पहनकर घूमता था। कितनी बुरी हालत है उसकी । अगले दिन ही मैं अपने पास के कुछ नए कपडे उसको दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

20. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।

मोरपाल - नमस्ते ।

मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?

मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।

मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?

मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर ।

मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?

मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा ।

मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?

मोरपाल - पसंद है । लेकिन मैं मज़बूर हूँ ।

मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है । कल से तुम भी नहीं हो तो ...

मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो । हम फिर मिलेंगे ।

मिहिर - ठीक है मोरपाल ।

21. मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ । मेरा परिवार बहुत गरीब है । इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है । अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ । मुझे आगे पढने का शौक है । मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है । उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा । मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी । तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था । आगे मैं क्या करूँ ?

PART - 2 (नील माधव पांडा की ‘ आई एम कलाम ’ फिल्म)

मतलब क्या है ?

1. इशारा करना - संकेत करना 2. नकल करना - अनुकरण करना 3. दिल जीत लेना - आकर्षित करना/ प्रशंसा का पात्र बनना
4. वाहवाही करना - प्रशंसा करना 5. दवा करना - चिकित्सा करना 6. वादा करना - वचन देना

1. फिल्म का नायक कौन था ?
छोटू उर्फ कलाम
2. रणविजय कौन है ?
कलाम का दोस्त, ढाणी के राणा सा का बेटा
3. फिल्म के कलाम की कहानी और लेखक के बचपन की कहानी में क्या फर्क है ?
फिल्म में कलाम दिल्ली पहुँचता है और अपनी पसंद के स्कूल जाने का मौका भी मिलता है। मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाता है और वह अपने पिता की तरह आज भी वहीं खेत-मजूरी करता है।
4. ‘ बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है ।‘- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं । फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं ।
5. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?
पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है ।
6. ‘ रणविजय को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है ।‘- क्यों ?
क्योंकि स्कूल रणविजय को परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है।
7. कलाम और रणविजय के बीच का लेन-देन क्या था ?
कलाम रणविजय को पेड पर चढना सिखाएगा और रणविजय कलाम को घुडसवारी सिखाएगा।
8. छोटू कहाँ काम करता है ?
भाटीसा की चाय की दुकान में
9. कलाम को चाय की दुकान में क्यों काम करना पडा ?
वह गरीब परिवार का था।
10. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?
स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना।
11. छोटू की आकांक्षाएँ क्या-क्या हैं ?
स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना
12. छोटू का परिवार कहाँ रहता है ?
जैसलमेर के किसी सुदूर देहांत में
13. माँ कलाम को चाय की दुकान थडी पर क्यों छोड जाती है ?
काम करने केलिए
14. ‘ छोटू सिर्फ़ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।‘- इसका मतलब क्या है ?
वह कलाम जैसा बनना चाहता है।
15. ‘ छोटू खुद ही अपना नाम कलाम रख लेता है ।‘- क्यों ?
ढाणी के लोग उसे छोटू कहकर बुलाता था, जो वह पसंद नहीं करता था। उसका सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना। पढ-लिखकर कलाम जी जैसे बडे आदमी बनने के मोह से वह खुद अपना नाम कलाम रख लेता है। इस नामकरण में हम उसकी आकांक्षाओं का अक्स देख सकते हैं।
16. ‘ लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।‘- इससे आपने क्या समझा ?
चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं। टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है। स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है।
17. ‘ लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।‘- तो वह कैसे जीना चाहता है ?
वह राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण से प्रभावित होकर कलाम बनना चाहता है। इसलिए वह छोटू नाम के बदले अपना नाम कलाम रखता है।
18. कलाम सीखने में तेज़ है। समर्थन करें।
कलाम ढाणी पर आते विदेशी टूरिस्ट की बोली झट से सीख लेता है। साथ-साथ रणविजय से अंग्रेज़ी भी सीख लेता है।
19. ‘ चाय में जादू है ’ का मतलब क्या है ?
बढिया चाय है।
20. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?
क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है। उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है। वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है।
21. भाटीसा छोटू की किस कलाकारी की प्रशंसा करते हैं ?
वह बढिया चाय बनाता है।
22. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?
वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी।

23. छोटू लूसी मैडम का दिल कैसे जीत लेता है ?

विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है । इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है ।

24. छोटू की डायरी (टीवी में राष्ट्रपति कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ. कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

25. टिप्पणी - छोटू उर्फ कलाम की चरित्रगत विशेषताएँ

‘ नील माधव पांडा ’ की ‘ आई एम कलाम ’ फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था-स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन , बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है ।

26. टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था । पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था । रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था । कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी । कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे । रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था । कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था ।

27. कलाम की डायरी (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

तारीख : ……………….

आज मैं अपनी माँ के साथ गाँव से भाटी सा की चाय की थडी में आया । मुझे यहाँ काम करने केलिए छोडके मेरी माँ गाँव चली गई । मेरे घर की गरीबी ने मुझे यहाँ पहुँचाया । आगे मुझे यहाँ रहना पडेगा । कोई परवाह नहीं । मुझे एक बडी इच्छा है । राष्ट्रपति कलाम के समान बनना । मैं इस चाय की थडी से पैसा कमाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा । ईमानदारी से काम करके सबकी प्रशंसा का पात्र बनना है । लेकिन सबसे पहले पढाई होनी चाहिए । अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाकर पढाई करने का अवसर मुझे कब मिलेगा । यदि भाटी सा मेरी सहायता करेंगे तो मैं किसी न किसी तरह छोडा-थोडा पढना भी चाहता हूँ । जो भी हो मैं अपना प्रयास ज़ारी रखूँगा । छुट्टी मिलने पर माँ से फिर मिलूँगा । मेरे जीवन का यह अविस्मरणीय दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

28. वार्तालाप (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

माँ - जी आप इस थडी के मालिक हैं ?
भाटी सा - हाँ । बताइए माँ, मैं आपकी क्या सहायता करूँ ?
माँ - यह मेरा बेटा है, इसे आपकी दुकान में काम पर रखने की कृपा कीजिए ।
भाटी सा - आप कहाँ से रही हैं ?
माँ - मैं जैसलमेर के पासवाले एक गाँव से आती हूँ । मैं अपनी गरीबी से इस बच्चे को बचाना चाहती हूँ । आप मेरी मदद कीजिए ।
भाटी सा - ठीक है । मैं इसे कितने रुपए दे दूँ ? छोटा लडका है ।
माँ - आप कुछ भी दीजिए, इसे अपने पास रखने की कृपा करें ।
भाटी सा - ज़रूर । एक महीना देख लेता हूँ । ठीक है तो अपने पास ही रख लूँगा ।
माँ - बडी मदद होगी साहब ।
भाटी सा - अंदर आओ बेटा, अपने सामान रख लो । क्या आपका बेटा जल्दी यहाँ के सारे काम सीख लेगा ?
माँ -ज़रूर साहब, मेरा बेटा सीखने में तेज़ है । वह जल्दी ही सब सीख लेगा ।
भाटी सा - तो ठीक है माँ, आप जाइए । मैं इसे देख लूँगा ।
माँ - धन्यवाद साहब ।
भाटी सा - धन्यवाद माँ ।

29. वार्तालाप – छोटू भाटी सा को चाय बनाकर देने पर

कलाम - प्रणाम भाटी मामा ।
भाटी सा - खुश रहो बेटा ।
कलाम - आप चाय पीजिए ।
भाटी सा - चाय ... तुमने बनाई ?
कलाम - हाँ जी ।
भाटी सा - अरे वाह !
कलाम - कैसे हैं भाटी मामा ?
भाटी सा - इस चाय में जादू है ।
कलाम - आपको पसंद आई ?
भाटी सा - बिलकुल, पहली बार ऐसी चाय पीता हूँ ।
कलाम - सही ?
भाटी सा - यह तो कलाकारी है । इसलिए आजकल ज़्यादा विदेशी लोग इसी दुकान में आते हैं । ज़रूर ऐसा ही होगा ।
कलाम - धन्यवाद भाटी मामा ।

30. वार्तालाप – कलाम और लूसी मैडम के बीच का (दिल्ली जाने की कलाम की इच्छा के बारे में)

कलाम - मैडम नमस्ते । क्या चाहिए ?
लूसी मैडम - नमस्ते कलाम । मुझे बस एक चाय चाहिए ।
कलाम - ठीक है, मैं अभी लाता हूँ ।
लूसी मैडम – भाटीसा कहाँ गया ?
कलाम - बाज़ार गया है ।
लूसी मैडम – (चाय पीकर) तुम्हारी चाय तो कमाल की है बेटा ।
कलाम - जी, आपकी तारीफ केलिए धन्यवाद । आप कब दिल्ली जाएँगी ?
लूसी मैडम – अगले हफ्ते । क्या है बेटा, बताइए ?
कलाम - जी, मैं दिल्ली जाकर राष्ट्रपति कलाम जी से मिलना चाहता हूँ । क्या मैं भी आपके साथ आऊँ ?
लूसी मैडम – ऐसा हो तो भाटीसा से कहकर तुम भी आओ मेरे साथ । मैं ज़रूर तुम्हें उनसे मिलवाऊँगी ।
कलाम - ठीक है मैडम । भाटीसा से छुट्टी माँगकर मैं ज़रूर आपके साथ आऊँगा ।
लूसी मैडम - ठीक है बेटा । तुम जाने की तैयारियाँ करो, अगले हफ्ते हम एकसाथ यहाँ से निकलेंगे । यही है चाय का पैसा । दिल्ली जाने के दिन मैं तुम्हें बुलाऊँगी । बाई ।
कलाम - आपकी इस मदद केलिए बहुत बहुत शुक्रिया मैडम । बाई ।

मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – दुखी बनना	2. तलाशी लेना – अन्वेषण करना	3. आरोप लगाना – इल्ज़ाम लगाना/ दोष लगाना
4. तय करना – निश्चय करना	5. प्रण तोडना – प्रतिज्ञा का लंघन करना	6. मंज़िल मिलना - लक्ष्य प्राप्त करना

1. भाषण देने में रणविजय की परेशानी क्या है ?
   उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी ।
2. ' रणविजय बहुत परेशान हुआ ।'- क्यों ?
   एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । लेकिन उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस कारण रणविजय बहुत परेशान हुआ ।
3. रणविजय हिंदी भाषण में प्रथम पुरस्कार पाता है । कैसे ?
   कलाम द्वारा लिखित भाषण स्कूल में प्रस्तुत करने से
4. कलाम रणविजय को क्या लिखकर देता है ? क्यों ?
   एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । उसकी हिंदी अच्छी न होने से कलाम उसे झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर देता है ।

5. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : --------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया । ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

SREEJITH R KOVOOR, VARKALA SCRIPS

6. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?
रणविजय - कुछ नहीं छोटू ।
कलाम - क्या बात है ? जो भी हो, हल हो जाएगा ।
रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है ।
कलाम - वह अच्छी बात है न ?
रणविजय - बात यह है छोटू ... मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है ।
कलाम - यही बात है न ... ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।
रणविजय - कैसे ?
कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।
रणविजय - ज़रूर । बहुत बहुत धन्यवाद छोटू ।
कलाम - तुम मेरा मित्र हो न ... मुझसे धन्यवाद कहने की कोई आवश्यकता नहीं ।
रणविजय - ठीक है यार ।

7. रणविजय की डायरी (भाषण जीतकर आने पर कलाम चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली जाता है)

तारीख : ....

आज कलाम की मदद से मुझे भाषण में प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला । सभी लोगों ने मेरी तारीफ की । लेकिन मेरे मन में उसका चेहरा था । मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस भाषण के बारे में बताते वक्त उसने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था । वह भाषण कितना आकर्षक था । दूसरों की खुशी चाहनेवाला उसका मन कितना बडा है ! पर क्या करूँ ? ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप में गाँव छोडकर दिल्ली गया है । मैं दुख सह न पाया । सच में मुझे बचाने केलिए उसने वह चोरी का आरोप सह लिया था । दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाले मित्र को मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी । कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा । वापस आकर उसे भी मेरे स्कूल में भर्ती कराना है । ऐसे हम एक साथ स्कूल बस में स्कूल जाएँगे । वह कितना खुश होगा ! उसकी मंज़िल की पूर्ति करना अब मेरा ही दायित्व है ।

8. कलाम के नाम रणविजय का पत्र (भाषण प्रतियोगिता जीतने पर कलाम की मदद के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हारी मदद से आज मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में तुम्हारा चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त तुमने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला तेरा मन कितना बडा है कलाम। मैं तुम्हारा आभारी हूँ । एक दिन तुमसे मिलने आऊँगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

हम – से जुडे शब्द और अर्थ

1. हमनाम - समान नामवाला	2. हमउम्र - समान उम्रवाला	3. हमअसर - समान असरवाला	4. हमख्याल - समान मतवाला
5. हमजोली - समान ओहदेवाला	6. हमजिंस - समान जाति का	7. हमपेशा - समान काम करनेवाला	8. हम मज़हब - समान धर्म का
9. हम वतन - समान देश का	10. हम शक्ल - समान आकार का		

1. यहाँ ' झूठा आरोप ' क्या है ?

उसने रणविजय की चीज़ों को चुरा लिया है ।

2. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?

वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से ।

3. छोटू ने रणविजय की दोस्ती के बारे में राणा-सा के कारिंदे से नहीं बताया । क्यों ?

छोटू और रणविजय की दोस्ती के कारण रणविजय को दंड मिलेगा । इसी डर से छोटू ने उनकी दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया । यह भी नहीं कि छोटू, रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता ।

4. ' छोटू ने चोरी का आरोप सहन किया ।'- क्यों ?

दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह चोरी का आरोप सहन करता है ।

5. ' लेकिन कलाम फिर कलाम है '- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।

राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

6. कलाम दिल्ली में जाना क्यों चाहता है ?

अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को खुद देने ।

7. छोटू गाँव छोडकर क्यों जाता है ?

क्योंकि उसके ऊपर चोरी का आरोप लगाया जाता है ।

8. फिल्म के अंत में कलाम क्या तय करता है ?

वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा ।

9. ‘ छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।’- उसकी मंज़िल क्या थी ?

दिल्ली जाकर डॉ. कलाम से मिलना और अपने पसंद स्कूल जाना

10. रपट (चोरी का आरोप लगने पर छोटू चाय की थडी छोडकर भाग जाता है ।)

चोरी का आरोप : बालक लापता

स्थान : ……. चोरी के आरोप से दुखी बालक छोटू कल से जैसलमेर से लापता हो गया है । छोटू कुछ महीनों से भाटी सा की चाय की थडी में काम कर रहा था । इसके बीच ढाणी के राणा के बेटे से उसकी दोस्ती हो गयी । उसने छोटू को बहुत सारी चीज़ें भेंट स्वरूप दी थी । ये देखकर राणा सा के आदमी गलती से उसे चोर समझा था । रणविजय से असलियत जानने पर राणा और उसके आदमी छोटू की खोज में हैं ।

11. कलाम की डायरी (राणा के कारिंदे ने उसपर चोरी के आरोप लगाने से वह दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज ढाणी के राणा के कारिंदे मेरे घर में आए । यहाँ तलाशी लेने पर उनको कुँवर रणविजय की चीज़ें मिली । ये चीज़ें मेरेलिए रणविजय ने ही दी थी । लेकिन राणा के कारिंदे ने मुझपर चोरी का आरोप लगाया । मुझे उनसे सज़ा मिली । मैंने नहीं बताया कि ये चीज़ें रणविजय ने मुझे दी हैं । यह बताएँ तो रणविजय को मेरी दोस्ती के नाम पर दंड मिलेगा । इसलिए मैं चुपके से दंड स्वीकार किया । मैं कुँवर रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता हूँ । आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

12. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ । यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है । कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे । कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया । पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा । मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया । इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया ।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता ।

13. पोस्टर - फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै

वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को

सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन - जिलाधीश

अध्यक्ष - क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन -

आई एम कलाम

प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से - 4 बजे तक

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...

सबका स्वागत

Br

SREEJITH R. KOVOOR, VAKKAM SCRIPTS

14. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख : ....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन । मेरा सपना साकार हो गया । स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया । स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ- साथ चले । क्लास में उसके साथ बैठकर पढा । स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई । याद आया, चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था । लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था । चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था । लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज ! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं । अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा । अच्छी तरह पढ -लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा ।

15. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ, जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है , मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है ।

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

16. पोस्टर (points) संदेश – बालश्रम के विरुद्ध

1. बालश्रम दुनिया की एक भीषण समस्या है... बच्चों को काम केलिए नहीं,स्कूल में भेज दें ।	4. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं... मिटाओ जड से बालश्रम,बचाइए भविष्य अपने देश की ।
2. बालश्रम रोको... बच्चों को पढने,खेलने और बढने दें ।	5. जिस देश के बच्चों का कोई भविष्य नहीं... उस देश की अपनी कोई भविष्य नहीं ।
3. बालश्रम कानूनी अपराध है... बालश्रम करानेवालों को कठिन दंड दें ।	6. बालश्रम एक अभिशाप है... एकसाथ हम इस सामाजिक समस्या का उन्मूलन करें ।

विश्व बालश्रम विरुद्ध दिवस – जून 12

5. सबसे बडा शो मैन

मतलब क्या है ?

1. तब्दील हो जाना - बदल जाना/ परिवर्तित होना
2. मज़बूर करना - विवश करना
3. ज़िद करना - हठ करना
4. डर जाना - भयभीत होना
5. बहस करना - वाद-विवाद करना
6. आवाज़ फट जाना - स्वर खराब होना
7. झेल पाना - संभाल पाना

1. लोग क्यों चिल्लाने लगे ?

गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से ।

2. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।

3. ' इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया ।'- उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?

जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा । किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है । उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन –पोषण करेगी ।

4. लेखक ने यहाँ शोर ' अभद्र शोर ' कहा गया है । क्यों ?

क्योंकि वहाँ के दर्शकों ने जो शोर मचाया था वह अहित या हितकर नहीं था

5. ' चार्ली परदे के पीछे खडा होकर आवाज़ के तमाशे को देख रहा था ।'- यहाँ तमाशा क्या थी ?

चार्ली की माँ स्टेज पर गाना गाते समय उनकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग म्याऊँ- म्याऊँ की आवाज़ निकालने लगे । चार्ली को माँ का यह हाल तमाशा जैसे लगा ।

6. माँ और मैनेजर के बीच बहस क्यों हुआ ?

मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले जाने की ज़िद को लेकर

7. चार्ली को स्टेज पर भेजने की बात को लेकर किन- किन के बीच बहस होती हैं ?

माँ और मैनेजर के बीच

8. मैनेजर किसकी ज़िद करने लगा ?

चार्ली को स्टेज पर भेजने की

9. चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद किसने की ?

मैनेजर ने

10. मैनेजर ने किसको स्टेज पर भेजने की ज़िद की ?

चार्ली को

11. मैनेजर किसकी ज़िद करने लगा ?

चार्ली को स्टेज पर भेजने की

12. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?

मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था । इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा ।

13. चार्ली को स्टेज पर भेजने से माँ क्यों डर गई ?

पाँच साल का उसका बेटा शोर मचाती इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ।

14. ' चार्ली को स्टेज पर गाना पडा ।'- क्यों ?

माँ की आवाज़ फटने से

15. वार्तालाप (माँ और मैनेजर के बीच का बहस)

मैनेजर - हेन्ना जी क्या हुआ ?
माँ - जी ... मेरा गला खराब हो गया है ।
मैनेजर - और एक बार कोशिश करो ।
माँ - कोई फायदा नहीं ।
मैनेजर - देखो लोग शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शांत कराना होगा ।
माँ - हे भगवान , अब मैं क्या करूँ ?
मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । मैं एक बात कहूँ ? तुम मानोगी न ?
माँ - बताइए ।
मैनेजर - आपका बेटा है न चार्ली ... उसको स्टेज पर भेजो, वह कुछ करके दिखाएगा ।
माँ - चार्ली ! आप यह क्या कह रहे हैं ?
मैनेजर - मैंने उसका अभिनय देखा है । बडा होशियार है । इसलिए कह रहा हूँ ।
माँ - पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ? मुझे गर लगता है ।
मैनेजर - घबराओ मत, मुझे उस पर विश्वास है ।
माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

16. वार्तालाप (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।)

माँ – चार्ली बेटा ... ।
चार्ली – क्या है माँ क्या हुआ ?
माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं। उन्हें शांत कराना है।
चार्ली – मैं क्या करना है बताइए ?
माँ – मैनेजर साब कहता है तुम स्टेज पर जाकर कुछ करो।
चार्ली – मैं ? मुझे क्या आता है ?
माँ – मेरे दोस्तों के सामने जो किया वही स्टेज पर जाकर करो।
चार्ली – इतना है तो मैं करूँगा माँ।
माँ – तो मेरे साथ चलो बेटा।
चार्ली – ठीक है माँ।

17. पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 7 बजे से
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में

प्रवेश टिकट से :
सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

मतलब क्या है ?

1. गाना सजने लगा - गाना अच्छा होने लगा	2. पैसों की बौछार शुरू हो गई - पैसों की वर्षा होने लगी	3. शुरू होना - आरंभ होना
4. रोक देना - बंद करना	5. बटोरना - इकट्ठा करना / एकत्रित करना	6. लग जाना - साथ जाना
7. हवाला करना - हाथ में सौंप देना	8. ठहाका मारना - ज़ोर से हँसना	

1. बहुत मुबाहिसा के बाद कौन चार्ली को स्टेज पर ले गया ? और क्यों ?
   मैनेजर ने। क्योंकि वह चार्ली का अभिनय करते हुए देखा था। इसलिए शोर मचाती भीड को शांत कराने केलिए वह चार्ली को स्टेज पर ले गया।
2. ‘ पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था ’- उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?
   चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा।
3. स्टेज पर पहली बार आने पर चार्ली ने कौन-सा गीत गाया ?
   जैक जोन्स
4. ‘ कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे।‘- क्यों ?
   पाँच साल का चार्ली मशहूर गीत जैक जोन्स गाना अपने तरीके से गाना लगा। इस कारण ऑर्केस्ट्रावाले असमंजस में पडे रहे, बाद में वे चार्ली के गाने की धुन के अनुसार गाना सजने लगे।
5. चार्ली के गाना सुनकर लोगों ने क्या किया ?
   पैसे स्टेज पर फेंकने लगा
6. चार्ली ने बीच में गाना क्यों रोक दिया ?
   चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई। उन पैसों को बटोरने केलिए उसने बीच में गाना रोक दिया।
7. ‘ इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया।‘- बात क्या थी ?
   पैसे बटोरने के बाद गाने की उसकी घोषणा
8. स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू होते देख चार्ली ने क्या किया ?
   गाना रोककर उसने पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की
9. चार्ली की किस घोषणा हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ?
   पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा।
10. चार्ली ने क्या घोषणा की ?
   पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा।

11. " पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा "- ऐसा किसने कहा ?

चार्ली ने

12. ' इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।'- कैसे ?

चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । तब गाना रोककर उसने पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की । इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।

13. चार्ली को क्यों लगा कि मैनेजर खुद पैसे रख लेना चाहता है ?

क्योंकि मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा

14. चार्ली क्यों मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ?

क्योंकि उसे लगा कि मैनेजर सारे पैसे खुद लेना चाहता है ।

15. दर्शकों की हँसी क्यों बढ गई ?

क्योंकि चार्ली रूमाल की पोटली में पैसे बाँध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ।

16. पटकथा (स्टेज पैसे फेंकते देखकर चार्ली गाना रोककर पैसे बटोरकर आगे गाने के बारे में लोगों से घोषणा करता है ।)

स्थान - संगीत प्रोग्राम के एक हॉल में ।

समय - शाम को 7 बजे ।

पात्र - 1. चार्ली, करीब पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है ।

2. चार्ली की माँ, करीब 40 साल की औरत, चुडीदार पहनी है । स्टेज के एक कोने में खडी है ।

3. मैनेजर, करीब 50 साल का आदमी, पतलून और कमीज़ पहना है । स्टेज के एक कोने में खडा है ।

4. हॉल भर में दर्शक शोर मचा रहे हैं ।

दृश्य का विवरण - स्टेज पैसे फेंकते देखकर चार्ली गाना रोककर पैसे बटोरकर आगे गाने के बारे में लोगों से घोषणा करता है ।

संवाद –

चार्ली - (हाथ उठाते हुए) मेरे प्यारे दर्शको, ... मेरे गाने केलिए इतने पैसे फेंकने केलिए बहुत शुक्रिया ।

दर्शक - गाना पसंद आया तो ऐसा ही है न ? पर तुमने गाना क्यों रोक दिया बेटा ?

चार्ली - पहले मैं ये पैसे बटोरकर माँ को दूँगा और उसके बाद ही आगे गाऊँगा । तब तक क्षमा करो ।

दर्शक - ठीक है बेटा । जल्दी आकर गाना पूरा करो बेटा ।

चार्ली - धन्यवाद । पैसे बटोरकर माँ को देकर मैं अभी आया । (चार्ली पैसे बटोरने लगता तो मैनेजर वहाँ आता है ।)

मैनेजर - चार्ली बेटा, पैसा बटोरने केलिए मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।

चार्ली - (संदेह से) अच्छा ठीक है ।

(एक रूमाल लेकर मैनेजर पैसे बटोरता है । पैसे की पोटली लेकर मैनेजर बैकस्टेज की ओर जाता है । चार्ली व्याकुलता से उसका पीछा करता है । मैनेजर पैसे की पोटली माँ के हवाला करने के बाद ही चार्ली स्टेज लौटता है ।)

मतलब क्या है ?

1. गुदगुदी फैलाना - उल्लासित करना/ पुलकित करना 2. नकल उतारना – अनुकरण करना
3. तारीफ करना - प्रशंसा करना/ अभिनंदन करना 4. हाथ मिलाना - हस्तधारण करना 5. जन्म लेना - पैदा होना/ मशहूर हो जाना

1. चार्ली ने जनता में गुदगुदी फैलाने केलिए क्या-क्या किए ?

उसने गीत गाया, दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कुछ गायकों की नकल उतारी

2. चार्ली के कमाल के प्रदर्शन देखकर लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी?

लोगों में ठहाकों की हिस्सेदारी हुई

3. लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर किसकी तारीफ की?

चार्ली की

4. ' चार्ली ने लोगों में गुदगुदी फैला दी ।'- कैसे ?

चार्ली का गाना सुनकर लोग पैसे फेंकने लगे तो वह गाना रोककर पैसा बटोरने लगा । मैनेजर पैसे बटोरकर बैकस्टेज जाने लगे तो शिकायत करते हुए उनके पीछे चला । वे पैसे की पोटली माँ को देने तक चार्ली वापस नहीं आया । उसके इन व्यवहारों ने जनता में गुदगुदी फैला दी । वे उसकी मासूमियत, प्रस्तुती और प्रवृत्तियों को स्वीकार कर रहे थे ।

5. लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ क्यों की ?

चार्ली ने अपनी प्रस्तुति और बाल सहज भोलापन से जनता में गुदगुदी फैले दी थी । इसलिए लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ की ।

6. दर्शकों ने चार्ली का अभिनंदन कैसे किया ?

दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की ।

7. दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ क्यों बजाईं ?

चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।

8. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?

पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया । उसने जनता में गुदगुदी फैला दी । इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया ।

9. ' दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।'- कब ?

जब माँ चार्ली को लेने स्टेज पर आ गई तब

10. मासूमियत में चार्ली ने क्या किया ?

उसने थोडी देर पहले फटी माँ की आवाज़ और उसके फुसफुसाने की भी नकल उतार दी ।

11. ' चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ... ।' माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?

चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी । विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा । गले का दर्द बढ रही थी । उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था । इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा ।

12. ' उसने जन्म ले लिया था ।'- इसका क्या मतलब है ?

स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया । इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता । इसलिए ऐसा कहा गया है ।

13. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा । इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

14. माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

15. चार्ली की डायरी (पहला शो)

तारीख : ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा । लोग बहुत शोर मचा रहे थे । पहले मैं बहुत डर गया था । फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी । फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था । मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा ।

16. मैनेजर की डायरी

तारीख : ....

आज का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन था । मैं ने जो कुछ किया था, वह बिलकुल सही निकला । चार्ली बहुत होशियारी से लोगों को अपने वश में कर लिया । केवल पाँच साल का बच्चा... बडी चतुराई है उसमें ! मुझे डर था कि पाँच साल का लडका उग्र भीड को झेल पाएगा क्या ? उसका जैक जोन्स का गाना... बहुत अच्छा निकला । दूसरों की नकल उतारना... नाचना... सब अच्छे निकले । स्टेज पर लोग जमकर पैसे बरसने लगे । तारीफ करने लगे । मन खुशी से खिल उठने लगा । ज़रूर वह एक बडा शो मैन बनेगा ।

17. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !
चार्ली – लेकिन मैं खुश नहीं हूँ अम्मा ।
माँ – क्या हुआ बेटा ?
चार्ली – आप पर लोगों ने ...
माँ – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?
चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?
माँ – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...
चार्ली – ऐसा न कहो माँ ।
माँ – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

VARKALA

18. वार्तालाप – माँ और दर्शक

दर्शक - क्या, यह आपका बेटा है ?

माँ - हाँ, क्या आपको उसको शो पसंद आए ?

दर्शक - ज़रूर मैडम। उसने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

माँ - भगवान की जय हो। अब बेटे के बारे में सोचकर मुझे बहुत गर्व हो रहा है।

दर्शक - क्या नाम है उसका ?

माँ - चार्ली।

दर्शक - कितने साल का है ?

माँ - पाँच।

दर्शक - हे भगवान, इतने छोटे उम्र में ? वह तो ज़रूर होनहार बच्चा है। आगे भी उसे शो केलिए भेजना।

माँ - मैं ज़रूर कोशिश करूँगी।

दर्शक - आपके शब्द को क्या हुआ था ?

माँ - पता नहीं क्या हुआ ? गले में दर्द हो रहा है। अस्पताल जाकर देखना है। अब मुझे जाना है।

दर्शक - ठीक है, आप जाइए।

19. वार्तालाप – मैनेजर और पत्नी

पत्नी - क्या हुआ ? आज बहुत खुश दिखते हैं।

मैनेजर - हाँ, बहुत खुश हूँ।

पत्नी - बताइए बात क्या है ?

मैनेजर - आज गायिका हेन्ना की आवाज़ खराब हो गई थी। उसकी जगह बेटे को मैं स्टेज पर ले गया।

पत्नी - बेटे को ? वह तो पाँच साल का है न ? उसने क्या किया ?

मैनेजर - पहले मुझे भी डर तो था। पर उसने तो कमाल ही कर दिया। कुछ समय से वह अपनी मासूमियत से शोर मचाती भीड को अपने वश में लाया।

पत्नी - आप क्या क्या कर रहे हो ... उसने ?

मैनेजर - मैं ठीक कहता हूँ। चार्ली की शो के बारे में जानकर बहुत लोग उसके शो केलिए अब फोन कर रहे हैं।

पत्नी - यह तो अच्छी बात हुई। माँ नहीं तो बेटा आपकी मदद की।

मैनेजर – तुमने सही कहा। खाना लो, बहुत भूख लगती है।

पत्नी - मैं खाना लाती हूँ। आप नहाकर आइए।

20. **पोस्टर** (संगोष्ठी) - सर्कस फ़िल्म का समकालीन महत्व,

चैप्लिन स्मृति मंच के नेतृत्व में

संगोष्ठी

विषय - सर्कस फ़िल्म का समकालीन महत्व

दिनांक - 16 अप्रैल 2021 को, (चैप्लिन स्मृति दिवस पर)
स्थान - करोलबाग, दिल्ली
समय - शाम 7 बजे

उद्घाटन - जिलाधीश

विषय प्रस्तुति – क्लब प्रसिडेंट

सर्कस फ़िल्म का प्रदर्शन भी होगा।

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...

सबका स्वागत

SREEJITH P. KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

6. अकाल और उसके बाद PART - 1 (कई दिनों तक ------------- हालत रही शिकस्त)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. समीप - पास 2. दिवस - दिन 3. उदास - दुखी 4. एक आँखवाली - कानी 5. भीत - दीवार 6. अवस्था / स्थिति - हालत

7. पराजय / टूट फूट - शिकस्त 8. बहुत - कई

2. मतलब क्या है ?

1. गश्त लगाना - इधर–उधर चलना

3. कवितांश का आशय

हिंदी के मशहूर प्रगतिशील कवि नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है। कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण है।

अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था। इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। यानी इनका कोई काम नहीं है। इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही। घर में खाना मिलने पर ही उसका छोटा हिस्सा घर की कानी कुतिया को भी मिलता है। पर यहाँ कानी कुतिया पिछले कुछ दिनों से खाना न मिलने की निराशा से चूल्हा और चक्की के पास सोई थी। भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर घूम रही थीं। दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? भोजन न मिलने से चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय थी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं। क्योंकि घर में खाना बनने पर ही उन्हें भी खाने केलिए कुछ मिलता है। अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। यहाँ कवि ने साधारण किसान की भूख और बेचैनी को व्यंग्यात्मक शैली में वर्णित किया है।

कवि नागार्जुन ने एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव पदार्थों के ज़रिए घर की बुरी हालत का चित्रण अच्छी तरह किया है। कविता में अकाल ग्रस्त घर के माहौल को प्रस्तुत करने में कवि सफल हुए हैं। सरल भाषा में लिखी यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है।

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल की भीषणता का

2. कवि ने अकाल की भीषणता को किन-किन के माध्यम से व्यक्त किया है ?

चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकली और चूहे के माध्यम से

3. कवि ने अकाल का चित्रण किन-किन दृश्यों के माध्यम से किया है ?

चूल्हे का रोना, चक्की का उदास होना, कानी कुतिया का सोता रहना, छिपकलियों की गश्त, चूहों की बुरी हालत आदि से

4. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

‘ चूल्हे का रोना ’ और ‘ चक्की का उदास होना ’- इसका मतलब क्या है ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही।

5. चूल्हा और चक्की क्यों बहुत दुखी हैं ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही।

6. कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त - ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर इशारा करती है ?

यहाँ कवि अकाल की भीषणता की स्थिति का वर्णन करते हैं। अकाल से घर की हालत दयनीय बन गई है। अकाल की तीव्रता के कारण छिपकली, चूहा जैसे जीवों को भी खाने केलिए कुछ नहीं मिलता है।

7. चूल्हे और चक्की का काम न चलने का कारण है।

घर में दाना नहीं

8. चूल्हा रोया, चक्की रही उदास – यहाँ किसकी सूचना है ?

खाद्य पदार्थों के अभाव की

9. चूल्हा क्यों रोया ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं होने से खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता। इसलिए अपनी निर्जीव हालत पर वह रोया।

10. ‘ चक्की रही उदास ’- से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं होने से पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इसलिए अपनी निर्जीव हालत कारण चक्की दुखी रही।

11. कानी कुतिया क्या कर रही थी ?

चूल्हा और चक्की के पास सो रही थी।

12. कानी कुतिया किनके पास सोई पडी थी ?

चूल्हा और चक्की के पास

13. कानी कुतिया कहाँ सोई हुई थी ? क्यों ?

कानी कुतिया उदास होकर चूल्हा और चक्की के पास सोई हुई थी। क्योंकि उसे कहीं से खाने को कुछ मिलने की संभावना नहीं थी।

14. छिपकलियाँ क्या कर रही थीं ?
इधर-उधर गश्त कर रही थी

15. भीत पर कौन गश्त लगा रही है ?
छिपकली

16. छिपकलियाँ कहाँ गश्त लगा रही हैं ?
भीत पर

17. छिपकलियाँ भीत पर गश्त क्यों लगा रही थीं ?
अकाल के कारण घर की हालत इतनी बुरी थी कि किसीकेलिए खाना नहीं था। इसलिए कीडों को न मिलने से यानी भूख से परेशान होकर छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर चलती थीं। दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ?

18. कई दिनों तक किसकी हालत शिकस्त रही ?
चूहों की

19. अकाल में चूहों की क्या हालत हो गई ?
भोजन न मिलने से अकाल में चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय बन गयी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं।

20. 'चूहों की भी रही शिकस्त'- इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?
अकाल के कारण घर में खाना नहीं है।

21. चूहों की हालत क्यों बुरी हो गयी है ?
चूहों को घर से या खेतों से खाने को कुछ नहीं मिल रहा है।

22. टिप्पणी - अकाल का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण किया है। अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था। इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही। पिछले कुछ दिनों से चूल्हे जलने और चक्की के चलने की प्रतीक्षा में पडी कानी कुतिया अंत में उनके पास ही सो गई। घर की गरीबी के कारण दीया नहीं जलाता, कीडे नहीं आते। इस कारण भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवारों पर इधर-उधर घूम रही थीं। चूहों को खाने केलिए कुछ नहीं मिला था। इसलिए उनकी हालत भी अत्यंत दयनीय थी। अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्रको ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं के ज़रिए घर की बुरी हालत यानी अकाल की भीषणता का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

23. टिप्पणी - अकाल की परेशानियाँ

अकाल बहुत दुखदायक है। इस अभावयुक्त हालत में चारों ओर विषाद और निराशा छा जाती है। पाठभाग में भी हम यह देख सकते हैं। देश में अकाल फैलने के कारण घर की हालत बहुत बुरी थी। कई दिनों तक चूल्हा रोया। चूल्हे में रखकर पकाने केलिए कोई दाना घर में नहीं था। चक्की भी उदास रही। चक्की में डालकर पीसने केलिए अनाज घर में नहीं था। खाने की प्रतीक्षा में चक्की और चूल्हे के पास पडी हुई कानी कुतिया सो गयी। दीवार पर छिपकलियों की गश्त लगी रही, दीपक हो तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? चूहों की हालत भी शिकस्त रही। घर के अंदर ही नहीं बाहर खेतों में भी अनाज नहीं था। अकाल मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी भूखमरी का शिकार बना देता है। अकाल भोजन की समस्या, भूख-प्यास की परेशानी तथा कई बीमारियाँ फैलने का कारण भी बनता है। अकाल की परेशानियों से बचने का उचित उपाय हमें खुद ढूँढना है ताकि हम सुख भरा जीवन बिता सके।

24. पोस्टर (संदेश) **points – जल संरक्षण**

1. जल प्रकृति का अमूल्य वरदान...
सभी का अस्तित्व जल पर निर्भर।

2. जल जीवामृत है...
जल नहीं है तो कल नहीं।

3. जल का दुरुपयोग मत करो...
जल का उपयोग सावधानी से।

4. जलस्रोतों को प्रदूषित मत करो...
शुद्ध जल स्वस्थ जीवन का आधार।

5. पहाडियों को गिराना,जंगल-पेडों की कटाई,
जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
जल की किल्लत से रक्षा पाओ।

6. जल को संजोके रखो...
हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए...।

7. भूमिगत जल शोषण पर रोक लगाएँ...
पेयजल केलिए संभाव्य लडाई से बच दें।

8. बारिश के पानी को बेकार बहने न दें...
पानी को धरती में उतरने दो।

विश्व जल दिवस – मार्च 22

PART - 2 (दाने आए ------------- कई दिनों के बाद)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. अनाज - दाना 2. भीतर - अंदर 3. पंख, पर - पाँख 4. काक - कौआ

2. मतलब क्या है ?

1. आँखें चमक उठीं – घर के सभी संतुष्ट हो गए 2. घर भर की आँखें – घरवाले और वहाँ के सारे जीवजंतु

3. धुआँ उठा आँगन से ऊपर – घर में खाना पकाने लगे

3. कवितांश का आशय

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी। घर में कई दिनों के बाद दाने अए। घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा। घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं। घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं। यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं। अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है। अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है।

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?
   अकाल के बाद की खुशहाली
2. कवि ने अकाल के बाद का चित्रण किन-किन दृश्यों के माध्यम से किया है ?
   घर के अंदर दाने आना, आँगन से ऊपर धुआँ का उठना, घर भर की आँखों का चमक उठना, कौए के पंखों का खुजलाना आदि
3. घर के अंदर क्या आए ?
   दाने
4. आँगन से ऊपर क्या उठा ?
   धुआँ
5. आँगन से ऊपर धुआँ कब उठता है ?
   घर में खाना पकाने लगे तो
6. दाना आने पर घर भर में क्या होता है ?
   आँखें चमक उठती हैं।
7. कौआ क्या करता है ?
   पंख खुजलता है।
8. सबकी आँखें कब चमक उठी ?
   घर में खाना पकाने से
9. ‘ चमक उठीं घर भर की आँखें ’- इसका मतलब क्या है ?
   अकाल के दिन बीत जाने पर कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से खाना पकाया गया। इसलिए घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं।
10. ‘ धुआँ उठा आँगन से ऊपर ’– इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?
    अकाल दूर होने से कई दिनों के बाद घर में दाने आए। इससे चूल्हा जलाने लगा, आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा। घर में रहनेवाले सभी जीवों की आँखें खुशी से चमकने लगीं। क्योंकि आज उनको खाना मिलनेवाला है।
11. कौआ अपनी पाँखें खुजलाने का कारण क्या है ?
    अकाल के बाद घर में खाना पकाया गया। इसलिए घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौआ अपनी पाँखें खुजलाया होगा। यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं।
12. ‘ घर भर की आँखें ’- कवि के अनुसार यहाँ घर के सदस्य कौन-कौन हैं ?
    चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकली, चूहा और कौआ।
13. दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
    धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद - इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
    कवि ने यहाँ अकाल के बाद की स्थिति का वर्णन किया है। अकाल के बाद घर में दाने आने पर घर के आँगन से ऊपर धुआँ उठता है। अर्थात् चूल्हा जलने लगा है। यह घर में खाने पकाने की ओर इशारा करता है। अकाल की भीषण हालत अब बदल गई है।
14. कविता में किन-किन जीव-जंतुओं के ज़िक्र हैं ?
    कानी कुतिया, छिपकली, चूहा और कौआ
15. अकाल और उसके बाद कविता का आशय है ?
    अकाल मनुष्य के एवं जीव जंतुओं के जीवन से जुडा हुआ है।

SREENATH.P, KOVOOR, VARKALA SCRIPTS

16. टिप्पणी – अकाल के बाद का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर के अकाल के बाद की हालत का बारीक चित्रण किया है। अकाल के समय में जो दयनीय अवस्था थी, अकाल के बाद वह बदल गई। अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं, सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होने लगा। दाना मिलने पर खाना पकाने केलिए चूल्हा जलाया गया। उस समय बहुत दिनों के बाद घर के आँगन से ऊँपर धुआँ उठता हुआ दिखाई देता है। घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव-जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं। घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं। अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ-साथ सभी जीव-जंतु भी संतुष्ट हो जाते हैं। अकाल के समय धीरे-धीरे बदलने पर मनुष्य के जीवन में सुख भरे दिन वापस आते हैं और पुन : अपनी संप्पन्नता को प्राप्त कर लेती है। प्रकृति भी पुन: अपने स्वरूप को प्राप्त करती है और समस्त प्राणी चैन की साँस लेते हैं। यहाँ प्रकृति की बदली हालत यानी अकाल के बाद की खुशहाली का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

17. टिप्पणी - कविता में कई दिनों तक और कई दिनों के बाद दुहराने का तात्पर्य

नागार्जुन की एक छोटी-सी कविता है अकाल और उसके बाद। इस कविता के पहले बंद की चार पंक्तियों में अकाल की भीषणता का वर्णन और दूसरे बंद के चार पंक्तियों में अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन करते हैं। बहुत दिनों तक पडे रहे लंबे अकाल के वर्णन करने केलिए कवि कई दिनों तक कई बार दोहराते हैं। इसी प्रकार कई दिनों के अकाल के दुख के बाद फिर आई खुशी का वर्णन करने केलिए कई दिनों के बाद का प्रयोग कवि दोहराते हैं। घर में कई दिनों तक खाने के अभाव में मनुष्य ही नहीं सभी निर्जीव वस्तुएँ बहुत विवश होते हैं। अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होते हैं। कई दिनों तक शब्द वस्तुओं की चेतनहीन हालत और कई दिनों के बाद शब्द चेतनयुक्त हालत सूचित करता है। कई दिनों तक ज़ारी रहा दुख कई दिनों के बाद खुशी में बदल गया। कई दिनों के दुख के बाद की खुशी हमें समझाने केलिए कवि ने ऐसा प्रयोग किया है। सुख और दुख मानव जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं।

18. लेख – खेती का महत्व

खेती नहीं तो खाना नहीं। खाना जीवों की आधारभूत आवश्यकता है। भोजन के बिना जीवों को जीवित रह न सकते। संसार का अन्नदाता किसान तपती हुई धूप,कठिन सर्दी और भारी वर्षा में कठिन परिश्रम करके अनाज उत्पन्न करते हैं। देश की उन्नति तथा उसके समग्र विकास में खेती का स्थान उत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि के माध्यम से खाद्य उत्पन्न होता है। आज कई कारणों से खेती कम होती जा रही है। इसलिए किसानों का आदर करके खेती को बढावा देना चाहिए।

19. पोस्टर (संदेश) points – खेती का संरक्षण

1 खेती पर हमारा जीवन निर्भर...
खेती नहीं तो हम नहीं।

2 खेती और किसान को प्रोत्साहन दें...
किसान हमारे अन्नदाता हैं।

3 अच्छे बीज, खाद, आर्थिक सहायता आदि से किसानों की सहायता करें...
खेती को बढावा दें, खेती का विकास करें।

4 खेती नहीं तो खाना नहीं...
खाना जीवों की अभूतभूत आवश्यकता है।

5 भारत एक कृषिप्रधान देश है...
किसानों की उन्नति के बिना देश की उन्नति नहीं होती।

देशीय किसान दिवस – दिसंबर 23

20. पोस्टर - भोजन के दुर्व्यय के विरुद्ध

1. भोजन है जीवन, अन्न ही है भगवान
2. खाने की बर्बादी न करें...
बचे हुए भोजन का सदुपयोग करें।
3. बचा हुआ अच्छा भोजन
ज़रूरतमंद तक पहुँचाएँ।
4. भोजन का दुर्व्यय ... सबसे बडा पाप है जीवन में
इसलिए जितनी हो भूख ... उतना ही भोजन थाली में।

7. ठाकुर का कुआँ PART - 1 (जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो ------------- उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया ।)

मतलब क्या है ?

1. कंधा देना - सहायता करना/ सहारा देना
2. पानी की खराबी जाती रहती है - पानी शुद्ध हो जाता है
3. रहा नहीं जाना - सह न पाना
4. मारे बास के पिया नहीं जाता - दुर्गंध के कारण पीना मुश्किल है
5. हाथ-पाँव तुडवाना - बुरी तरह पीटना
6. एक के पाँच लेना - अधिक लाभ लेना
7. कुएँ पर चढने देना - कुएँ से पानी भरने देना
8. डाँट बताना - बुरा कहना/ दोष निकालना
9. बढ जाना - अधिक हो जाना
10. गला सूख जाना - प्यास लगना

1. ' ठाकुर का कुआँ ' कहानी में चर्चित मुख्य समस्या क्या है ?
   ऊँच-नीच का भेदभाव
2. जोखू की हालत कैसी थी ?
   जोखू बीमार है और प्यास से तडप रहा है ।
3. जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो क्या हुआ ?
   लोटे के पानी से सख्त बदबू आई ।
4. जोखू लोटे का पानी क्यों पी नहीं सका ?
   क्योंकि लोटे के पानी से सख्त बदबू आ रही थी । ऐसे बदबूदार पानी पीने से बीमारी बढ जाने की संभावना होने से पत्नी गंगी ने उसे वह पानी पीने न दिया था ।
5. पानी की बदबू का कारण क्या होगा ?
   कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा ।
6. ' गंगी ठाकुर के कुएँ से पानी ले नहीं सकती थी ।'- क्यों ?
   गाँव के अन्य दो कुएँ ऊँची जाति के लोगों के हैं । निम्नजाति की स्त्री होने के कारण गंगी वहाँ से पानी नहीं ले सकती थी ।
7. ' दूर से लोग डाँट बताएँगे ।'- क्यों ?
   वे निम्न जाति के हैं ।
8. ' गंगी ने जोखू को गंदा पानी पीने को न दिया ।'- क्यों ?
   क्योंकि वह जानती थी खराब पानी से पति की बीमारी बढ जाएगी ।
9. ' गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी ।'- क्यों ?
   कुआँ बहुत दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था ।
10. ' गंगी नहीं जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है ।'- यहाँ किस सामाजिक वास्तविकता प्रकट होती है ?
    यहाँ गंगी की अशिक्षित हालत का संकेत है । निम्नजाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । इसलिए उनमें अनजानी, अंधविश्वास आदि भी देखे जाते हैं । जाति के नाम पर किसीसे शिक्षा मिलने का अपना अधिकार छीनना उचित नहीं है ।
11. ' खराब पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी ।'- पानी के खराब होने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं ?
    कूडे कचरों से पानी गंदा होता है । कुआँ साफ न होगा तो पानी गंदा होगा । कुएँ में जानवरों के मरने से पानी गंदा होगा ।
12. खराब पानी से क्या होगा ?
    बीमारी बढ जाएगी
13. यहाँ पानी की खराबी दूर करने का क्या उपाय बताया गया है ?
    पानी को उबालना
14. ' गंगी यह न जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर हो जाती है ।'- क्यों ?
    क्योंकि वह अशिक्षित थी ।
15. ' ठाकुर के कुएँ पर कौन चढने देगा ? '- गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?
    गंगी चमार जाति की है । वर्ण व्यवस्था के अनुसार वह अछूत थी । उनकी छाया तक ऊँच जाति अपवित्र मानी जाती थी । इसलिए गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती ।
16. ' मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से ?'- यहाँ जोखू की किस की ओर संकेत है ?
    जोखू निम्नजाति में जन्मा था । उस समय जातिप्रथा ज़ोरों में था । निम्नजाति के लोगों को उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं था । पीने का पानी तक उन्हें निषेध था ।
17. ' पानी कहाँ से लाएगी ?'- जोखू के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।
    गंगी पानी लाते कुएँ में कोई जानवर गिरकर मरा है । निम्नजाति के होने से उन्हें ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लाने की अनुमति नहीं थी । यदि ऐसा किया तो उच्चजाति के लोग उसे जान से मार डालेगा । कोई तीसरा कुआँ गाँव में नहीं था । इसलिए शुद्ध पानी लाने की कठिनाई की ओर यहाँ संकेत है ।
18. जोखू ने पूछा - "पानी कहाँ से लाएगी ?"- इस शंका के क्या-क्या कारण हैं ?
    जोखू के गाँव में उच्च जातिवाले ठाकुर और साहू के दो कुएँ हैं । निम्न जाति के लोगों के कुएँ का पानी खराब हो गया था । निम्नजातिवाले लोगों को ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेने की अनुमति नहीं है । इसलिए जोखू ने गंगी से ऐसा कहा ।
19. ' क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे '- गंगी के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।
    अछूत होने के कारण गंगी को कुएँ से साफ पानी भरने का भी हक नहीं है । सभी अधिकार समाज में उच्च माननेवालों के पास है । गंगी को समझ में नहीं आती कि लोग कैसे श्रेष्ठ बनते हैं । यहाँ समाज की असमानता के विरुद्ध गंगी का आक्रोश ही प्रकट होता है ।
20. जोखू गंगी को दूसरे कुएँ से पानी लेने ले क्यों मना करता है ?
    गंगी ठाकुर या साहू के कुएँ से पानी लेने जाएगी तो वह हाथ तुडवाकर वापस आएगी ।

21. ‘ हाथ-पाँव तुडवा आएगी और कुछ न होगा ।‘- जोखू के इस कथन पर आपका विचार क्या है ?

यह वाक्य गंगी से जोखू का कथन है । इस कथन के ज़रिए जोखू एक सामाजिक सत्य को हमारे सामने प्रस्तुत करता है । इसमें छुआछूत के भावना के विरुद्ध जोखू का आक्रोश हम सुन सकते हैं । निम्न जाति के लोगों को उच्च माननेवालों के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । ये लोग उच्च वर्ग के लोगों की क्रूरता सहकर जीने को विवश थे ।

22. पटकथा (शुरुआत भाग)

स्थान – एक झोंपडी का भीतरी भाग ।

समय – दोपहर के दो बजे ।

पात्र – गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)

दृश्य का विवरण – प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद –

जोखू – बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।

गंगी – अभी लाती हूँ ।

जोखू – यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?

गंगी – गाँव के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?

जोखू – मारे प्यास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !

गंगी – (लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी । कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।

जोखू – प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी – मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ । आप लेट जाइए ।

जोखू – दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी – ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ?

जोखू – हाथ–पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।

गंगी – आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।

जोखू – ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

23. समाचार तैयार करें ।

कुएँ में मरा जानवर ; पीने के पानी केलिए तरसते लोग

स्थान : .... यहाँ के निम्न वर्ग के लोग के कुएँ में पिछले दिन एक मरे जानवर को दिखाई दिया । पानी गंदा होने से उससे बदबू आ रही है । निम्न वर्ग के लोगों के पानी लेने का एकमात्र आश्रय यह कुआँ था । पेयजल के अभाव से यहाँ लोग बहुत मुसीबत में हैं । पिछले दिनों से इस कुएँ के पानी का उपयोग करते लोग आशंका में है । ऊँचे वर्ग के लोगों के कुएँ तक जाने की अनुमति न होने के कारण गरीब लोग चिंतित है ।

PART - 2 (रात के नौ बजे थे । ------------- परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !)

मतलब क्या है ?

1. साफ निकल जाना - बिना किसी तकलीफ से बच जाना 2. छाती पर साँप लोटना - ईर्ष्या में जलना / अत्यंत जलन होना / बुरी दृष्टि से देखना
3. मौके का इंतज़ार करना - अवसर की प्रतीक्षा करना 4. एक से एक छंटा - सबसे बुरा

1. गंगी पानी लेने कब निकल पडी थी ? क्यों ?

रात को 9 बजे, पति केलिए साफ पानी लेने केलिए

2. ‘ हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ‘- यहाँ किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत है ?

जातिप्रथा

3. ‘ इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है । किसीकेलिए रोक नहीं, सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते ।‘- गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?

क्योंकि वे नीची जाति के हैं ।

4. यहाँ बदनज़ीब कौन है ?

निम्न जाति के लोग

5. ‘ सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते ।‘- क्यों ?

वे नीच जाति के हैं ।

6. गंगी क्यों सोचती है ठाकुर जैसे लोग छंडे हैं ?

क्योंकि ठाकुर जैसे लोग चोरी, जाल फरेब, झूठे मुकदमे आदि करते हैं ।

7. ‘ इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीती है ।‘- किस कुएँ का ?

ठाकुर के

8. ‘ गंगी रात को पानी लेने केलिए निकल पडी ।‘- कहाँ से पानी लेने केलिए ?

ठाकुर के कुएँ से

9. गंगी क्यों सोचती है, ठाकुर जैसे लोग छंटे हैं ?

ठाकुर जैसे लोग चोरी, जाल-फरेब, झूठे मुकदमे आदि करते हैं ।

10. ' मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका ।'- इसका क्या मतलब है ?

पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे । आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है । लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं ।

11. गंगी का विद्रोही दिल किस पर चोटें करने लगा ?

रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर

12. ' रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है ।'- क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?

पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है । इसपर सबका समान अधिकार है । पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है । इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है ।

13. ' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- इन व्यवहारों से गंगी के कौन-कौन से मनोभाव प्रकट होते हैं ?

गंगी विद्रोही नारी है, जातिप्रथा वह पसंद नहीं करती । वह जातिप्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाना चाहती है ।

14. ' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?

समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है । उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा । जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है । ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है । जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है ।

15. ऊँच–नीच के भेदभाव पर अपना विचार क्या है ? लिखें ।

हमें ऊँच–नीच के भेदभावों को छोडना चाहिए । जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है । किसीको जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है ।

16. ' गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा ।'- यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है ?

जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे ।

17. यह प्रसंग किस सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत किया है ?

यह प्रसंग जातीय असमानता की समस्या की ओर संकेत करता है । मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है । जाति के नाम पर लोगों को उच्च और निम्न मानना अन्याय है । जातीय असमानता एक सामाजिक अभिशाप है । यह सामाजिक विकास में बडा बाधा उत्पन्न करती है । सभी लोगों को अच्छी शिक्षा मिलने पर एक हद तक यह समस्या दूर हो जाएगी । लेकिन आज भी हमारे देश में जाति के नाम पर हमले होते हैं, हत्या तक होती है । मुंशी प्रेमचंद अपनी कहानी ठाकुर का कुआँ में गंगी नामक पात्र के द्वारा जातीय असमानता के खिलाफ अपना विचार प्रस्तुत करते हैं ।

18. ' ठाकुर के कुएँ के पास पहुँचने पर भी गंगी जल्दी पानी नहीं ले सकती थी ।'- क्यों ?

क्योंकि ठाकुर के दरवाज़े पर कुछ लोग खडे थे । वहाँ से धुँधला प्रकाश भी कुएँ पर आ रहा था । यहीं नहीं दो स्त्रियाँ भी उस समय पानी लेने आई थीं ।

19. ' गंगी अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी ।'- किसकेलिए ?

पानी लेने केलिए

20. पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें ...
   जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें ।
2. छुआछूत दूर करो ...
   समाज की उन्नति पाओ ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं ...
   जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध ।
4. सभी मानव समान ...
   जाति न देखो, कर्म देखो ।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म
   जाति ने नाम पर अत्याचार न करें ।
6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो ...
   याद दें ... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती ।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा
   जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो ।
8. करो रोकथाम जातिप्रता का ...
   अपनेलिए ... मनुष्यता केलिए ...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ ...
   इसे मिटाओ ... सभी मानवों को समान मानो ।

विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस – मार्च 21

21. टिप्पणी – समाज में सभी लोगों को समान अवसर का अधिकार है

हमारे देश में अनेक लोग रहते हैं । उनके रंग, रूप, वेश, भाषा आदि भिन्न हैं । कुछ लोग अमीर हैं तो कुछ लोग गरीब हैं । लेकिन इनके बीच सामाजिक असमानता हम देखते हैं । यह आज की एक बडी समस्या है । अन्न, वस्त्र, घर आदि मानव की आवश्यकताएँ हैं । लेकिन समाज के कुछ लोग इनसे वंचित हैं । हमारे संविधान के अनुसार हर एक नागरिक को खाना मिलने का, घर मिलने का, कपडे मिलने का और पीने के पानी मिलने का अधिकार है । फिर भी समाज के सभ्य कहे जानेवाले संपन्न वर्ग गरीब या निम्न वर्ग के लोगों को कुचल डालते हैं । इस कारण निम्न वर्ग के लोगों को पीने केलिए शुद्ध पानी भी नहीं मिलता है । यह उचित नहीं है । समाज के सभी लोगों को समान रूप से जीने का अवसर मिलना चाहिए ।

22. पोस्टर (संगोष्ठी) – जातिप्रथा एक अभिशाप है

सरकारी जी एच एस एस, कोल्लम

संगोष्ठी

विषय - जातिप्रथा एक अभिशाप है

आयोजन – हिंदी मंच

2018 जनवरी 18, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल

प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक

जातिप्रथा समाज का अभिशाप है ...
इसे रोको ... समाज को सुधारो ... ।

भाग लें... लाभ उठाएँ...

सबका स्वागत

23. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है । आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है । जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है । उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं । लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है । सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है । उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे । इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है । जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए । इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है ।

PART - 3 (कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई ----------- अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था ।)

मतलब क्या है ?
1. लहू थूकना - मुँह से खून आना 2. रत्ती भर उम्मीद न होना - आशा करने की शिथिति में न होना 3. मुँह सीधा न होना - प्रसन्नता का भाव न होना

1. औरतें कुएँ के पास क्यों आई थीं ?
कुएँ से घरवालों केलिए घडे में ताज़ा पानी भरकर लाने केलिए

2. ' गंगी वृक्ष के अंधेरे साये में जा खडी हुई ।'- क्यों ?
कुएँ के पास किसीके आने की आहट होने से

3. गंगी की छाती क्यों धक-धक करने लगी ?
किसी के आने की आहट सुनकर

4. ' गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली ।'- क्यों ?
कुएँ के पास कोई नहीं था ।

5. ' गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली ।'- कब ?
ठाकुर के दरवाज़े पर कुछ लोग बातें कर रहे थे । वे लौट गए । ठाकुर भी दरवाज़ा बंद करके अंदर सोने गए । गंगी को कुएँ से पानी लेने का अवसर सामने आया । उस समय गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली ।

6. ' विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था ।'- गंगी एसा क्यों सोचती है ?
पानी निकालने वह जगत पर चढी

7. ' गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था ।'- गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा ?
अछूत होने के कारण गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती । रात की निर्जन हालत में सही, गंगी जीवन में पहली बार ठाकुर के कुएँ की जगत पर चढी, इससे उसको गर्व का अनुभव हुआ होगा ।

8. वार्तालाप (दो औरतें कुएँ से पानी भरने आयीं)

पहली औरत - (जलन के साथ) देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं ।
दूसरी औरत - ठीक कहा तुमने । खाना खाने बैठते ही हुकम चलाया कि कुएँ से ताज़ा पानी भर लाओ । घडे केलिए पैसे नहीं है ।
पहली औरत - (गुस्से में) हमें आराम से बैठे देखकर मरदों को जलन होती है ।
दूसरी औरत - हाँ, ये लोग एक कलसिया भर पानी भरकर नहीं आते। बस हुकम चला दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ, जैसे हम लौडियाँ ही तो हैं ।
पहली औरत - लौडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम ? रोटी-कपडा नहीं मिलती क्या ? दस-पाँच रुपए भी छीन-झपटकर लेती हो न ? और क्या चाहिए तुम्हें ?
दूसरी औरत - मत लजाओ दीदी ! छिन्न भर आराम करने को मन बहुत तरसता है । इतना काम और कहीं करें तो इससे आराम मिलती । यहाँ काम करते हुए मर जाने पर भी किसीके चेहरे पर खुशी नहीं दिखता ।
पहली औरत - तुम सच कहती हो दीदी, ये लोग हमें नौकर समझकर रखे हैं ।
दूसरी औरत - ज़रूर । अब हम लौट चलें । वे हमें बुला रहे होंगे ।
पहली औरत - ठीक है । जल्दी चलिए ।

मतलब क्या है ?
1. कलेजा मज़बूत करना– धैर्य का अवलंबन करना

1. कहानी में ठाकुर की दरवाज़े की तुलना किससे की है ?
शेर का मुँह से
2. गंगी रस्सी छोडकर क्यों भाग गई ?
ठाकुर के द्वारा पकडे जाने डर से
3. गंगी के हाथ से रस्सी क्यों छूट गई ?
गंगी को मालूम हुआ कि दरवाज़ा खोलकर ठाकुर आनेवाला है । इस कारण से वह डर गयी और रस्सी हाथ से छूट गई ।
4. ' शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा ।'- यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है ?
शेर एक खूँखार जानवर है । उसके सामने से बच जाना मुश्किल है, पर असंभव नहीं । पर ठाकुर जैसे उच्च वर्ग के लोग शेर से भी अधिक क्रूर है । एक अछूत को कुएँ से पानी भरते देखें तो उसे जरूर मार ही डालेगा । गंगी यह बात अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए जब ठाकुर का दरवाज़ा एकाएक खुलता है तो अत्यंत डर जाने से वह ऐसा सोचती है ।
5. जोखू ने गंदा पानी पीने का निश्चय क्यों किया ?
जोखू को मालूम था कि ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेना आसानी की बात नहीं है । उसकी राय में ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के पाँच लेंगे । इस कारण से ही उसने गंदा पानी पीने का निश्चय किया ।

6. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?
जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।
गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ जाएगी तो ?
जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?
गंगी – नहीं ।
जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?
गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।
जोखू – फिर क्या हुआ ?
गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।
जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?
गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !
जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

7. गंगी की डायरी (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

तारीख : ....

आज का यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ? प्यास के मारे मेरे बीमार पति को शुद्ध पानी दे न पाई । आज उनके पूछने पर मैंने जो पानी दिया उससे बदबू आ रही थी । इसलिए मैंने उन्हें वह पानी पीने नहीं दिया । उनकेलिए साफ पानी लाने केलिए मैं रात के अंधेरे में रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल पडी । मैं घडे में रस्सी डालकर पानी खींच रही थी, अचानक ठाकुर दरवाज़ा खोलकर बाहर आए । मैं जल्दी घडा, रस्सी सब छोडकर वहाँ से भाग गयी । यदि पकड लिया तो ... । घर पहुँचकर मैंने देखा, मेरे पति वही गंदा पानी पी रहे हैं । अब मैं उन्हें कैसे मना करूँ ? हे भगवान ! हमारी यह बुरी हालत कब बदलेगी ?

8. जोखू की डायरी (अपनी बुरी हालत पर)

तारीख : ....

आज बीमार होने पर भी मुझे बदबूदार पानी पीना पडा । गला सूखा जा रहा था, तब मैं गंगी से पीने को कुछ पानी माँगा । पर उससे बदबू आ रहा था । हम जिस कुएँ से पानी भरते थे, उसमें कोई जानवर गिरकर मरा था । निम्नजाति के होने से हमको ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । गंगी तो साहस के साथ ठाकुर के कुएँ से पानी लेने गया । पर निराश लौट आयी । हे भगवान ! हमारी यह हालत कब बदलेगी ?

9. टिप्पणी - गंगी की चरित्रगत विशेषताएँ

गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है । वह निम्नजाति की मानी जाती है । उसके पति जोखू बीमार है । पीने केलिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है । ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है । लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी । रात को चुपके –चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है । उसका विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है । वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी । लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है । इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।

10. जोखू की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ का नायक है जोखू । नीच जाति में जन्म होने से उसको कई प्रकार की यातनाएँ सहना पडता है । लेकिन उसको किसीसे शिकायत नहीं है । वह अच्छी तरह जानता है कि अब की सामाजिक व्ववस्थिति उच्च जाति के अनुकूल है, कानून और न्यायालय उनके पक्ष में है । इसलिए उच्च वर्ग के विरुद्ध आवाज़ उठाने से कोई फायदा नहीं । वह बीमार से परेशान है, प्यास मिटाने कुछ शुद्ध पानी पीना चाहता है । फिर भी ठाकुर के कुएँ पर पानी भरने जाने से वह गंगी को रोकता है । वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता है । अपने परिवार को नष्ट न होने के लिए उस समय समाज में पनपे सामाजिक असमानताओं को सहने वह तैयार हो जाता है । वह ठाकुर जैसे लोगों के विरुद्ध कुछ करना नहीं चाहता, क्योंकि वह जानता है कि ऐसा करने पर यहाँ जीना भी मुश्किल हो जाएगा ।

11. गंगी का पत्र (पानी लाने की उसकी परेशानी)

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्यारी माँ,

आप कैसी हैं ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । आपकी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

हमेशा मन में आपकी याद आती है । वहाँ पहुँचने केलिए मन में बडी चाह है । लेकिन अपने परिवार की हालत देखकर मैं चुप होकर कैसे बैठूँगी ? माँ, जोखू को बीमार पडे कुछ दिन बीत गए । हमें साफ पानी नहीं मिलता है । गंदा पानी पीने से बीमारी बढने की संभावना है । इसलिए एक दिन साफ लेने केलिए मैं ठाकुर के कुएँ की जगत पर गई । रात नौ बजे के बाद मुझे एक मौका मिला । मैंने घडा और रस्सी कुएँ में डालकर तेज़ी से पानी खींचकर कुएँ की जगत पर रखा । उस वक्त ठाकुर का दरवाज़ा खुल गया । मेरे हाथ से घडा पानी में गिरा । ठाकुर को वहाँ आते देख मैं भागकर घर पहुँची । भाग्य से मेरी जान बच गयी । अब हम गंदा पानी पीकर जीते हैं ।

माँ एक दिन यहाँ आइए । तब सब हाल देखें । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA